श्रीवेङ्कटेश्वरस्वामीजी का मन्दिर, तिरुमल.

२-११-७९ से २९-२-१९८० तक

दैनिक पूजा एवं दर्शन के कार्यक्रम

शनि, रवि, सोम तथा मंगलवार

प्रात	3-00	से	3-30	तक	सुप्रभात
,,	3-30	,,	3-45	,,	शुद्धि
,,	3-45	,,	4-30	,,	तोमालसेवा
,,	4-30	,,	4-45	,,	कोलुवु तथा पचागश्रवण
,,	4-45	.	5-30	,,	पहली अर्चना
,,	5-30	,,	6-00	,,	पहलीघटी तथा सात्तुमोरै
,,	6-00	,	12-00	,,	**सर्वदर्शन**
दोपहर	12-00	,	1-00	,,	दूसरी अर्चना
,,	1-00	रात	9-00	,,	**सर्वदर्शन**
,,	1-00	,,	6-0(	,,	कल्याणोत्सव आदि
रात	9-00	,,	1 -00	,,	शुद्धि तथा रात का कैंकर्य
,,	10-00	,,	10-30	,,	शुद्धि
			10-30	,,	एकान्त सेवा

बुधवार (सहस्र कलशाभिषेक)

प्रात	3-00	से	3-30	तक	सुप्रभात
,,	3-30	,,	3-45	,,	शुद्धि
,,	3-45	,,	4-30	,,	तोमाल सेवा
,,	4-30	,,	4-45	,,	कोलुवु तथा पचाग श्रवण
,,	4-45	,,	5-30	,,	पहली अर्चना
,,	5-30	,,	6-00	,,	पहलीघटी तथा सात्तुमोरै
,,	6-00	,,	8-00	,,	सहस्र कलशाभिषेक
,,	8-00	रात	9-00	,,	**सवदर्शन**
दोपहर	1-00	,,	6-00	,,	कल्याणोत्सव आदि
रात	9-00	,,	10-00	,,	शुद्धि तथा रात का कैंकर्य
,,	10-00	,,	10-30	,,	शुद्धि
		,,	10-30	,,	एकात सेवा

गुरुवार (तिरुप्पावडा)

प्रातः	3-00	से	3-30	तक	सुप्रभात
,,	3-30	,,	3-45	,,	शुद्धि
प्रात.	3-45	से	4-30	तक	तोमाल सेवा
,,	4-30	,	4-45	,,	कोलुवु, तथा पंचागश्रवण
,,	4-45	,,	5-30	,,	पहली अर्चना
,,	5-30	,,	6-00	,,	पहली घटी, बाली तथा सात्तुमोरै
,,	6-00	,,	8-00	,,	सडलिपु, दूसरी अर्चना तिरुप्पावडा, इत्यादि
,,	8-00	रात	6-00	,,	**सर्वदर्शन**
दोपहर	1-00	रात	6-00	,,	कल्याणोत्सव आदि
	6 00	,,	8-00	,,	रात का कैंकर्य, घटी, पूलगि समर्पण, शुद्धि इत्यादि
,,	8-00	,,	10-00	,,	पूलगि **सर्वदर्शन**
,,	10-00	,,	10-30	,,	**शुद्धि**
		,,	10-30	,,	एकात सेवा

शुक्रवार (अभिषेक)

प्रात	3-00	से	3-30	तक	सुप्रभात
,,	3-30	,,	5-00	,,	सडलिपु का नित्य कैंकर्य (एकात)
,,	5-00	,,	7-00	,,	अभिषेक (अर्जित)
,,	7-00	,,	8-30	,,	समर्पण
,,	8-30	,,	9-30	,,	तोमाल सेवा अर्चना, घटी बालि तथा सात्तुमोरै
,,	9-30	,,	10-00	,,	दूसरी घटी, सात्तुमोरै
,,	10-00	रात	9-00	,,	**सर्वदर्शन**
दोपहर	1-00	,,	6-00	,,	कल्याणोत्सव आदि
रात	9-00	,,	10-00	,,	शुद्धि, रात का कैंकर्य
,,	10-00	,,	10-30	,,	**शुद्धि**
		,,	10-30	,,	एकात सेवा

सूचना १ उक्त कार्यक्रम किसी त्योहार तथा विशेष उत्सव दिनो के अवसर पर समयानुकूल बदल दिया जायगा। २. सुप्रभात दर्शन केलिए सिर्फ रु २५/- टिकेटवालो को ही अनुमति मिलेगी। ३. रु २५/- के टिकेट तिरुमल मे तथा आन्ध्रा बैंक के सभी शाखाओ मे मिलेगी। ४. सेवानतर टिकेट का रद्द कर दिया गया। ५. प्रत्येक दर्शन के टिकेटवालो को पहले के जैसे ध्वजस्थभ के पास से नही, बल्कि महाद्वार से क्यू मे मिलाया जायगा। ६. रु २००/- के आमत्रणोत्सव टिकेट पर दो ही व्यक्तियो को भेजा जायगा। ७. अर्चना, तोमाल सेवा, एकातसेवा मे दर्शनानंतर टिकेट या रु. २५/- का टिकेट नही बेचा जायेगा।

—**पेष्कार**, श्री बालाजी का मदिर, तिरुमल

"नीलोत्तुंग स्तनगिरि तटी सुप्तमुद्बोध्य कृष्णं
पारर्थ्यं स्वं श्रुतिशत शिरस्सिद्ध मध्यापयन्ति
स्वोच्छिष्टायां स्रजनिगळितं या बलात्कृत्य भुंक्ते
गोदा तस्यै नम इदमिदं भूय येवास्तुभूयः"

सप्तगिरि

वर्ष १०] दिसंबर १९७९ [अंक ७

एक प्रति .... रु. ०–५०

वार्षिक चंदा .... रु. ६–००

गौरव सपादक

श्री पी. वी. आर. के. प्रसाद

आइ. ए यस्,

कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति ति. दे. तिरुपति.

दूरवाणी २३२२

सपादक, प्रकाशक

के. सुब्बाराव, एम. ए,

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति

दूरवाणी २२५४.

मुद्रक

एम्. विजयकुमाररेड्डी,

मेनेजर, टी टी. डी. प्रेस्, तिरुपति

दूरवाणी २३४०.

अन्य विवरण के लिये

EDITOR

'Sapthagiri'

T T D Press Compound,

TIRUPATI-517501

"युगान्तेऽर्हितान् वेदान् सेतिहासन् महर्षयः ।
वेभिरे तपसापूर्वं अनुज्ञातः स्वयम्भूः ॥

हमारा पवित्र भारत देश आध्यात्मिक व दैविक चिंतन में अनादि काल से अग्रगामि रही। राजकीय, आर्थिक, वैज्ञानिकादि विषयों को सामना करते हुए निरंतर इस क्षेत्र में डटी रही तथा महर्षियों ने अपने दिव्य संदेशों से लोगों को सुख व शांति प्रदान करते रहे। हमारे हैन्दव धर्म बिलकुल प्राचीन होने पर भी उसमें आधुनिकता दिखाई पडती है। इसके लिए न कोई आदि न अंत है। निरंतर चलनेवाली जीवित संस्कृति है। अगर कभी कुछ रुकावट आवें तो कोई वेदान्ती संत या महर्षि पैदा होकर अपने संदेशों से लोगों को चेतावनी देकर लोकोद्धार करते हैं। अपने व्यक्तित्व व प्रवचनों द्वारा लोगों का पथप्रदर्शन करते हैं। उनमें से एक हैं श्री रमण महर्षि।

अपने महान पाण्डित्य या वादना शक्ति से विरोधियों को हराना या अपनी वेदांत प्रतिभा के कारण दूसरों को आश्चर्य चकित करना या मंत्र-तंत्र आदि महिमाओं से सभी लोगों को अपनी ओर आकृष्ट करना-ये तो जानते ही नहीं हैं। अपनी निरंतर तपस्याके कारण मौन मुद्रा को स्वीकार किया। दुःखों के मूल कारक इच्छाओं को त्याग करके तथा निराडबरता व अपने व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के द्वारा लोगों को प्रभावित किये थे। और वे तो तिरुवण्णामलै आश्रम छोडकर भी बाहर कभी नहीं गये। इस कलि व आणुविक युग में "महर्षि" के नाम से पुकारा जाना ही इनकी विशिष्टता है।

१३, दिसंबर, १८७९, को मधुरा के निकट तिरुचूलि नामक गाँव में सामान्य परिवार में जन्म लेकर सन् १८९६ में तिरुवण्णामलै आकर श्री अरुणाचलेश्वर की कृपा से महर्षि बनकर, सिर्फ भारत में ही नहीं पूरी दुनिया में ख्याति प्राप्त किये। उन्होंने तो अद्वैत सिद्धांत का ही बोध व आचरण किया, तथा दैविक सत् के बारे में उनकी भावनाएँ तथा अज्ञानांधकार को दूर करने के लिए उन्होंने जो रास्ता बताया है, वह प्रशंसनीय है। तथा कई लोगों के लिए मार्ग दर्शक रहे हैं। उस महर्षि के इस शतजयन्त्युत्सव के अवसर पर याद करते हुए उनके संदेशों का आचरण करके हमें अपने जीवन को धन्य बनाना चाहिए।

तिरुमल-यात्रियों को सूचनाएँ (केशसमर्पण)

केश समर्पण करने का रहस्य मानव के सपूर्ण अहभाव को छोडकर उस मूल विराट की शरण में विनीत भावना से अपने को समर्पित करना ही है। हमारे यहाँ केश समर्पण इसलिए एक प्रचलित प्रथा है।

लेकिन पारंपरिक एव साप्रदायिक पद्धति में भगवान को केश समर्पण करने से ही मनौती पूरी होगी। यात्रियों की इस प्रमुख मनौती को पूर्ण करने केलिए देवस्थान ने अनेक कल्याण कट्टाओं का प्रबध किया है। यह विषय विशेष रूप से कहने की आवश्यकता नहीं है कि अनधिकारी नाइयों से अन्य जगह सिरमुण्डन कराने से पवित्रता नही रहेगी और भक्त की मनौती भी पूरी नहीं होगी। देवस्थान के नियमित नाइयो से सिर मुण्डन करवाने से ही वे केश भगवान को समर्पित किये जायगे।

इसलिए यात्रियों से निवेदन है कि वे केवल देवस्थान के कल्याण कट्टाओं में ही अपने केश समर्पण करे जहाँ पर अनेक अनुभवी नाई रहते हैं और जिस के नजदीक ही नहाने केलिए नियत शुल्क चुकाने पर गरम पानी देने की व्यवस्था भी है। जो यात्री केश समर्पण कार्टेज में ही करवाना चाहते हैं, वे देवस्थान के द्वारा इस का प्रबध कर सकते हैं।

केश समर्पण केलिए उचित दर पर कल्याणकट्टाएँ तथा कार्टेजो के पास टिकट बेचे जाते हैं। नाइयों को अलग रूप से पैसे देने की आवश्यकता नहीं है।

कुछ धोखेबाज व्यक्ति सिर मुण्डन का कम शुल्क लेकर, भगवान के दर्शन शीघ्र ही करवाने के वायदे करके यात्रियों को अनधिकारी नाइयो के पास ले जा रहे हैं।

यात्रियो से निवेदन है कि देवस्थान के कल्याणकट्टाओ को छोडकर अन्य जगह सिर मुण्डन न करवावें। ऐसा करवाने से वे केश भगवान को समर्पित नहीं समझे जायेंगे और यात्रियों की मनौतियाँ भी पूरी नही होंगी। बालाजी के शीघ्र दर्शन की सुविधा के लिए ति ति देवस्थान के द्वारा जो उत्तम प्रबध किये गये है, कोई भी व्यक्ति भगवान का दर्शन से शीघ्रतर करवाने में असमर्थ है।

कार्यनिर्वहणाधिकारी,
ति. ति देवस्थान, तिरुपति.

सर्व दर्शनसमन्वयः

श्रीमन् गोडवर्ति शठकोपाचार्यः

श्लो ॥ अखिल भुवनजन्मस्थेम भङ्गादिलीले
विनतविविध भूतव्रातरक्षैकदीक्षे ।
श्रुतिसिरसिविदीप्ते ब्रह्मणि श्रीनिवासे
भवतु मम परस्मिन् शेमुषी भक्ति रूपा ॥१॥

श्लो ॥ नारायण· परोऽव्यक्ता दण्डमव्यक्त
सम्भवम् ।
अण्ड स्यान्तस्तिमे लोकास्सप्त द्वीपा च
मेदिनी ॥ २ ॥

श्लो ॥ द्वीपेषु जाम्बवं द्वीप बहुवर्षयुतं विदुः ।
वर्षेषु भारतं वर्षं नानामतयुतं ननु
॥ ३ ॥

सन्त्यस्मिन् भारते वर्षे वर्णाश्रमाचारवत् मतान्युच्चावचानि विततानि । सन्ति चात्र तत्तन्मताग्रहगृहीतहृदयैस्महृदयैरारचितानि दर्शनानि तथाभूतानि हृदयङ्गमानि दर्शनीयानि प्रेक्षावद्भिः । किन्तु किमेतनि परस्पर समन्वितानि सन्ति एकत्र पर्यवस्यन्ति । आहोस्विदनन्वितान्येव स्वतन्त्राणि सन्ति तत्र तत्रैव विश्रान्ति लभन्ते इति विचार तत्परास्तत्र कुशलाश्चाविमत्सरा विद्वद्वरा विरका । तेच तत्तद्दर्शन चणा विचक्षणा भवन्तु नाम । किन्तेन तेषामेकवाक्यतामपरिज्ञायाध्ययनेनादयापनेन वा । अतोत्र दर्शनानामुच्चावचानां समन्वय पूर्वाचार्याभिमतं यथामति प्रदर्शयिष्यामः । निन्दन्तु नन्दन्तु वा विद्वासः । न तत्राग्रहः । यथा वर्णानामाश्रमाणाञ्चा विरोधः प्रत्यूतोपकार्योपकारकभाव एव । तथा दर्शनानामपि न विरोध इति विपश्चितो यथा विजानीयुस्तथोत्तरत्रोपपादयिष्यामः । नन्विदं प्रतिज्ञामात्रं हेत्वादेरनुपन्यासात् । किञ्च सर्वदर्शनानामेकार्थपरत्वे दर्शन भेदो न स्यादिति चेत् - फलैकमत्येन एकार्थ परत्वेऽपि प्रकार भेदेन दर्शनभेदः । सर्वथा विरोधाभावेहि दर्शनभेदानुपपत्ति· । एवं भिन्नानामपि दर्शनानां एकार्थपरत्वं यथा जाघटीति तथोत्तरत्रोपपादयिष्यामः । तत्तन्मतसमर्थनैदम्पर्येण प्रवृत्ते चात्र तत्तद्दर्शनस्वरूपनिरूपणं नान्तरीयकं तथापि नानपेक्षित मुच्यते । अपेक्षित तु न त्यज्यते ।

दर्शनानि द्विविधानि नास्तिक दर्शनानि आस्तिक दर्शनानि चेति । नास्तीति मतिर्येषा ने नास्तिका· । अस्तीतिमतिर्येषान्ते आस्तिकाः । यथा यथ तैः प्रणीतानि नास्तिक दर्शनानि आस्तिक दर्शनानि चेत्युच्यन्ते ।

नास्तिकदर्शनेषु यल्लोकायतिक तत्सुरगुरुणा बृहस्पतिना प्रणीतम् । तेन च प्रवर्तित मत लोके आयतत्वात् लोकायत मित्यप्युच्यते । तन्मनावलम्बी च चार्वाकः प्रत्यक्षमेव प्रमाणमिति वदन् प्रमेयत्वव्यापक मिन्द्रिय सन्निकर्षाश्रयत्वमिति वक्ति । अतएव प्रत्यक्षमेकमेव प्रमाणमिति तन्मातावलम्बिनः चार्वाकाः प्रत्यक्षागोचरस्य अलीकतामालपन्ति । अतएव पारलौकिक न किमदि अभ्युपयन्ति वस्तु । पशु सदृक्षास्ते न विचार कुशला । पश्वादीना मपि प्रसिद्ध एवात्मानात्माविवेकपूर्वकः प्रत्यक्ष व्यवहारः । उपदेशाभावादिति लब्धवर्णास्तन्मतं न प्रतियन्ति । तद्व्यतिरिक्तास्तु ये नास्तिक : तेऽनुमानमपि प्रमाण मन्वते ।

सौगताः बुद्धः परमेश्वर इति नाभिमन्यन्ते । परन्तु तेषां मते सर्वससारिण इव बुद्धोप्यस्मिन् संसारे अनादि कालादारभ्य संसरति स्म । पश्चात्काल कश्चिवशात् शुभकर्मकृत्वा काश्चित् शुभगती· प्राप्तवान् कालक्रमेण च स शुद्धोदनगृहे सिद्धार्थो बभूव । तत्र कच्चित्कालं यौवनसुखमनुभूय तत्रासन्तुष्टः यौवनदशायामेव सकलत्रप्रत्तादिगृहविसृज्य सुदुष्करं तपश्चचार । क्रमशस्स ससारनिगलबन्धहेतु भूतान् रागादीन्यावास्त्यक्त्वा बुद्धो बभूव । ततस्ससर्वससारिजात दुःखनिवृत्युपायोपदेशेन ससारसागरादुद्धृत्य स्वय निर्वाणं प्राप्तवानितिक थयन्ति । तस्य चत्वारः शिष्याबभूवुः । वैभाषिक सौत्रान्तिक योगाचार माध्यमिक भेदात् । स च तेभ्यश्शून्यमेव तत्वमित्युपदिदेश ।

तथाहि—: शून्यमेकमेवतत्त्वम् । यतस्सर्वोऽपि भावोविनश्यति । वस्तुधर्मताद्विनाशस्य । यक्ष विनाशं स मिथ्या स्वाप्नवत् । यतस्सर्ववस्तूनामाद्यन्तयोर भावमात्रत्वान्मध्ये क्षणिकसत्त्वं सावृत्तिकम् । न पारमार्थिकं बन्धादि अत· किं केन बध्येत? भावानां विनाशित्वे हेतुः वस्तु धर्मत्वाद्विनाशस्येति । विनाशस्यवस्तुस्वभावतात् । स्वभाव तु विहाय न पदार्थस्तिष्ठतीत्यर्थः । तथा च सूत्रम—"शून्यं तत्त्वं भावो विनश्यति वस्तु धर्मत्वाद्विनाशस्येति" वदतो बुद्धस्याथमभिप्राय इति तेषामेकश्शिष्यः यथाश्रुतमेवजग्राह । अतएवाय मध्यम । नायमुत्तमो नवाधमः । अयमेव माध्यमिक इति व्यवह्रियते । द्वितीयस्तु नन्वस्तु विषयाणां मिथ्यात्वं ज्ञानस्य कथं तथात्वम् । ज्ञानं सत्यमेव । व्रतस्स्वप्नेऽपिविषयाणा मेव मिथ्यात्वं ज्ञानं तु वर्तत एव । योगोनामानुयोगः आचार. अनुष्ठान गुरूक्तस्यार्थस्य । अनुयोगस्य चाभ्युपगमस्यात्र दर्शनात् अयं योगाचार नामा आसीत् । तृतीयस्तु बाह्यं वस्तु नास्तीति यदुक्तं तदयुक्तम् । प्रमाणाभावादित्यादिना स्वमतं बा

सूचना

समाचार-पत्रों को समाचार जल्दी भेजने के लिए तिरुपति व तिरुमल में 'टेलेक्स' का प्रबंध किया गया है।

तिरुपति टेलेक्स नं: ४०३-२०२

तिरुमल टेलेक्स नं: ४०३-२०८.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान में अब 'टेलेक्स' की सुविधा है।

सप्तगिरि

तिरुपति तिरुमल देवस्थान ने आर्ष धर्म प्रचार तथा देवस्थान कार्यकलापो को सब लोगो को सुस्पष्ट करने के लिए सप्तगिरि मास पत्रिका को केवल हिन्दी में ही प्रत्येक रूप से प्रचुरण करने का निश्चय किया ।

सब पडित, कलाकार इत्यादि महोदयो से यह विज्ञापन है कि वे धार्मिक, आध्यात्मिक, साहित्यिक सबधी प्रमुख लेख और प्रसिद्ध धार्मिक क्षेत्र, प्रमुख पुण्य क्षेत्रो के सुंदर चित्र सप्तगिरि में प्रचुरण के लिए भेज सकते है ।

"सप्तगिरि" मासिक पत्रिका में हिन्दू धार्मिक सस्थाओ के देवालयो और तत्सम्बद्ध पुस्तक विक्रेता प्रतिष्ठानो से प्रकाशनार्थ विज्ञापन स्वीकार किये जाऐगा । दर निम्नलिखित है ।

प्रति विज्ञापन				दूसरा व तीसरा कवर पृष्ठ		
				, एक रग	..	„ 150
अन्दर के पृष्ठ	पूरा पेज	रु	80	„ दो रंग		„ 200
„	आधा पेज	„	50	तिरगा		„ 250
„	चौथाई पेज	„	30	प्रथम पृष्ठ	..	„ 150
कवर पेज (चतुर्थ)	एक रग में		„ 200	अन्तिम पृष्ठ	...	„ 110
„	दो रंगो में	..	„ 250	वार्ता पृष्ठ के सम्मुख (पूरा पेज)		„ 100
„	तीन रंगो में		„ 300	„ आधा पेज	..	„ 60

सांकेतिक सूचनाएँ

स्क्रीन कवर पेज	80 से 100
भीतर के पेज	80

पेज परिमाण (ब्लैक)

पूरा पेज	24 सें मी × 19 सें मी
आधा पेज	12 सें मी. × 19 सें मी.
चौथाई पेज	6 से मी. × 19 से मी

नोट :— विज्ञापन से संबधित समाचार तथा ब्लैक आदि संस्थाओ को ही देना पड़ेगा ।

१ चौथे कवर पेज के अतिरिक्त अन्यपृष्ठो के लिए ६ महीने का अग्रिम शुल्क जमाकर स्थान निश्चित करा लेने पर ऊपर दिये गये विज्ञापन शुल्को पर १० प्रतिशत कमीशन दिया जायगा । १२ महीनो के लिए अग्रिम देनेवालो को १५ प्रतिशत कमीशन दिया जायगा ।

प्रत्येक प्रति : रु. ०--५०. वार्षिक चंदा : रु. ६--००.

२. सब प्रांतो में सप्तगिरि प्रतिनिधियो को 25% कमीशन दिया जायेगा । जिन प्रातो में प्रतिनिधि नहीं होते वहाँ पर उत्सुक महोदय प्रतिनिधि बन सकते ।

३ अन्य विवरण सप्तगिरि के सपादक महोदय से प्राप्त कर सकते है ।

कार्यनिर्वहणाधिकारी,
तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति.

ह्यार्थानामनुमेयत्वं" भिन्नकालं कथं ग्राह्य मिति चेत् ग्राह्यता विदुः। हेतुत्वमेव च व्यक्तेः ज्ञानाकारार्पणक्षमम्।" इत्यादिना निर्धार्य 'दुःख समुदयमार्ग निरोधाश्चत्वारः आर्यबुद्धाभिमतानि तत्वानि' कीदृश तेषां स्वरूपमित्यपृच्छत्। तदा भगवास्तथागतः तेषा स्वरूपमुपदिश्य त्वं दुःख-समुदयद्वयनिरोधरूपमोक्षमार्गतत्त्वज्ञान परमरहस्यं सूत्रस्यान्त पृच्छसि। तदिद कथितमित्यचकथत्। अतस्तस्य सौत्रान्तिक इति सज्ञा। तुरीयस्तु 'बाह्येषु गन्धादिषु आन्तरेषु रूपस्कन्धादिष सत्स्वपि तत्रानास्थामुत्पादयितुं सर्वं शून्यमिति प्राथमिकान् विनेयानचीकथत् भगवान्। द्वितीयांस्तु विज्ञानमात्रग्रहाविष्टान् विज्ञानमेकमेव सदिति। तृतीयांस्तु उभय सत्यमित्यास्थितान् विज्ञेयमनुमेयमितिसेय विरुद्धा भाषा" इति वदन् वैभाषिकाख्याया विख्यातः।

त्रयोऽप्येते माध्यमिकव्यतिरिक्ताः स्वाभ्युपगतं वस्तुक्षणिकमाचक्षते। ननु कथमेतेषा दर्शनानां परस्पर प्रतिद्वन्द्विनां एकत्र समन्वय इति चेत् "सुगतसमयसीमा शून्यतावाद एवेति तैस्समर्थनात्। अतएव यदि महायाननिर्णीत एवार्थः किमर्थं तर्हि श्रावकयानप्रत्येकयाने भगवान् देशितवानिति चेत्। महायान प्राप्य प्रापणार्थमेव श्रावकयानप्रत्येक यानयोस्सोपानतया निर्माणात्। तदुक्तम्—आदिकर्मक सत्त्वस्य परमार्थावतारणे उपाय एव सम्बुद्धैस्सोपानमिव निर्मितः। सद्धर्मपुण्डरीकेप्युक्तम्—"एक यानं नयश्चैकः एकाचेय देशना नायकालाम्। उपायकौशल्यममेयरूप यन्त्राणि यानान्युपदर्शयामि।" नागार्जुनपादैरप्युक्तम्—धर्मधातोरसम्भेदाद्यानभेदोऽस्ति न प्रभो यानत्रितयमाख्यातं त्वया सत्त्वानुसारतः॥" अन्यत्राप्युक्तम्—"मुक्तिस्तु शून्यता दृष्टिस्तदर्था शेषभावना" इति। विनेयभेदेनोपदेशभेदः साम्प्रदायिक इति तेषामुदघोषः।

इदमत्रावधेयम्। सर्वशून्यतावादस्य माध्यमिकगृहीतस्य योगाचारेणानुपपत्तिप्रदर्शनपुरस्सरं विज्ञानमात्रसत्यत्वं तस्यच क्षणिकत्वं चाभ्युपेतम्। सौत्रान्तिकेन तु तदसहमानेन विषयाणामपि सत्य त्वमेव, परन्तु पृथिव्यादीनामनुमेयत्वमेव बाह्यानामान्तराणामिव चित्त चैत्ता दीनामित्यङ्गीकृतम्। वैभाषिकस्तु पृथिव्यादीनां स्थूलद्रव्याणां प्रत्यक्षविषयत्वमेव नानुमेयत्वम्। परमाणुसङ्घातरूपा भूतभौतिकाः प्रत्यक्षसिद्धा एव। चित्तचैत्तादिरूपाश्च ये पदार्थाः आन्तरास्ते आनुमानिका भवन्त्विति ज्ञानस्य विषयाणां च बाह्यानामान्तराणां न शून्यत्वम्। किन्तु भावा एव क्षणिका इतिवदन् तेषां सत्यत्वं बभाषे। 'संस्कृत क्षणिक सर्वमात्मशून्यमकर्तृकम्। आकाश द्वौ निरोधौ च नित्य त्रयमसंस्कृतमिति"। एतावतां दर्शनानामेतेषा आनुलोम्येन प्रातिलोम्ये न एकत्रैवार्थ शून्यतायामस्तितायां वा तात्पर्यमुपवर्णित भवति।

नन्विदमसङ्गतम्। शून्यतावाद एव सुगत समय सीमेति सौगतैस्सिद्धान्तितत्वेन वैभाषिकेण। कथ तद्विरुद्ध शून्यमेव तत्त्वमिति बौद्धसिद्धान्त-निराकरणपूर्वक सर्वसत्यत्वमास्थितमिति चेत्— अत्र वदन्ति केचन बौद्धाः बाह्येषु गन्धादिषु आन्तरेषु रूपादिस्कन्धेषु सत्स्वपि तत्रानास्थामुत्पादयितुं सर्वं शून्यमिति प्राथमिकान् विनेयानचीकथद्भगवान्। द्वितीयांस्तु विज्ञानमात्रग्रहाविष्टान् विज्ञानमेवैक सादति। तृतीयानुभय सत्यमित्यास्थितान्विज्ञेयमनुमेयमिति सेय विरुद्धा भाषा। अतस्सर्वसत्यतामेव तात्पर्यम्। कथमन्यथा भगवत इय विरुद्धा भाषा उपपद्यते। उपदेश भेदाश्च विनेय भेदाद्भिद्यन्त इति प्रथितम्।

अथ सौत्रान्तिकाभ्युपगत विज्ञानानुमेयत्त विषयाणा मस हमानानां, बाध्यानां प्रत्यक्षविषयत्व आन्तराणा मनुमेयत्वं च वदतां वैभाषिकाणा मभिसन्धि क इतिचेत—एषाहि तेषां परिभाषा समुन्मिषति। विज्ञानानुमेयत्ववादे प्रात्यक्षिकस्य कस्यचिदप्यर्थस्या भावेन व्याप्तिसवेदनस्थाना भावेन अनुमानप्रवृत्त्यनुपपत्ते. सकललोकानुभवव्यवहारादिविरोधश्चति। यद्यपि वैभाषिकः स्वाभ्युपगतपदार्थानां सर्वेषां सत्यत्व वदति। तथापि तेषां क्षणिकत्वं कालाकाशादिक च स्वरूपेण नानुमनुते। अतएवाहु- "संस्कृतं क्षणिक सर्वमात्मशून्य मकर्तृकम्। आकाश द्वौनिरोधौ च नित्यं त्रय मसंस्कृतम्॥' इति। सस्कृत भावरूपम-असंस्कृतं अभावरूपम् निरुपाख्यमित्यर्थः। द्वौ निरोधौ प्रतिसङ्ख्याप्रतिसङ्ख्यौ, आत्मशून्यं-देहेन्द्रयादिविलक्षणात्मरहितम्, अकर्तृक = कर्तृरहितमनीश्वरमित्यर्थः। वैदिकानां भावानां कालाकाशात्मनामीश्वरादीनाञ्चनभ्युपगमे न नास्तिक इत्युच्यते। ये तु काणादप्रभृतयः वेदप्रामाण्यवादिनः तेतु परमाणुकारणतावादं सौगताभिमतमङ्गीकृत्य कालाकाशादिकं वस्तु भावरूपमङ्गीकुर्वन्तः पृथिव्यादीनां क्षणिकत्व न सहन्ते। अतएव कणादाक्षपादादीना तदनन्तर भावित्वम्।

नन्वस्तु नास्तिकदर्शनानां आस्तिक दर्शन सन्निहितत्वं यतस्तेषां सर्वास्तित्व एव तात्पर्यम्। आस्तिकदर्शनानां तु कथं मित्रभावः? यतः काणादा अक्षपादाश्च सौगता इव परमाणु कारणता वादिनः। साङ्ख्यास्तु सौगता इव निरीश्वरवादिनोऽपि न परमाणुकारणतावादिन.। परन्तु प्रधानकारणता वादिनः। पातञ्जलास्तु प्रधानकारणतामङ्गीकुर्वाणा अपि न निरीश्वरवादिन.। जैमिनीया. पुन कर्ममीमांसका ईश्वरद्वेषिण·। वैयासिकास्तु ब्रह्मकारणतावादमाश्रयन्ते। सत्येतेषामित्थं विरोधे कथमेकार्थपरत्वमितिचेत् –

स्थविष्ठमिद चोद्यम्। समाधीयते। भगवान्सर्वज्ञस्सत्यसङ्कल्प आश्रितवात्सल्यैकजलधिस्सर्वेश्वरस्साधुपरित्राणाय दुष्कृद्विनाशाय च स्वेच्छया अवतरति। न चास्ति कालनियम स्तदवतरणस्य इति तु निखद्य भगवद्वचन प्रामाण्यात्। नारायण एव बुद्धोऽवततारेति पौराणिका·। प्रथितं दशस्ववतारेषु अन्यतमस्वं च तदवतारस्य। एवं कपिलो मुनिर्नारायणांशज इति वदन्तिकापिलाः। ऋषिं प्रसूत कपिलमिति च वैदिकीप्रसिद्धि·। मुनीनां कपिलोमुनिरिति गीतावचनाद्भगवद्विभूतित्वमस्यावगम्यते। "यद्यद्विभूतिमत्सत्वं श्रीमदूर्जितमेववा। तत्तदेवावगच्छत्वं ममतेजोशसम्भवम्॥" इति वचनेन कपिलस्येवान्येषामपि दर्शनकर्तृणां भगवद्विभूतित्व भगवदंशसम्भूतत्वमवर्जनीयम्। एतावता बुद्धादिभिः सर्वैर्दर्शन प्रवर्तकैः भगवत्तेजोशसम्भूतैस्साधुपरित्राणायैव भुवि अवतरणमित्युक्तप्रायम्। भगवान् सर्वेश्वरः स्वाभिमतं वैदिक सर्वास्तित्व वैदिकानां मनसि प्रतिष्ठां लभतामिति मन्वानः सर्वशून्यतावादपुरस्सर तत्तत्पदार्थसत्तावादिनो दार्शनिकान स्वाशसंभूतान् भूमाववतारयामास। प्रथमतः सर्वास्तित्वेऽल्पश्रुताना बुध्यारोहणासम्भवात्। नहि सौधशिखरमत्युच्चमारुरुक्षोः निश्श्रेणिकायाः चरमसोपानारोहणं प्रथमद्वितीयादि सोपानान्यनाक्रम्य सुकरं भवति। अतोऽन्तिमसोपान भूत सर्वास्तित्व मारोढुकामास्य अधस्तन सोपान भूतान्येवेमानि दर्शनानि क्रमशो दृश्यमानानीत्यवश्यं वक्तव्यम्।

शून्यमेव तत्त्वमित्येकरूप एव भगवतो बुद्धस्योपदेशः। तथापिविनेयभेदात् सिद्धान्तस्य चातुर्विध्यम्। तथा च भामतीग्रन्थे – हीनमध्यमोत्कृष्टमतयो हि शिष्या भवन्ति। तत्र ये हीनमतयस्ते सर्वास्तिवादेन तदाशयानुरोधेन शून्यतायामवतार्यन्ते। येमध्यमास्ते ज्ञानमात्रास्तितावादेन तदाशयानुरोधेन शून्यतायामवतार्यन्ते। ये प्रकृष्टमतयस्तेभ्यस्साक्षात्देव

शून्यतैव तत्त्वमिति प्रतिपाद्यते । यथोक्तं बोधिचित्तविवरणे – "देशना लोकनाथानां सत्त्वाशयवशानुगा । भिद्यन्ते बहुधा लोके उपायैर्बहुभिः पुनः । गम्भीरोत्तन भेदेन क्वचिच्चोभयलक्षणा । भिन्नापिदेशनाभिन्ना शून्यता द्वयलक्षणा ।।" इति ।

साङ्ख्यदर्शनसूत्रे च "भावोविनश्यति वस्तुधर्मत्वाद्विनाशस्य" (44) शून्यमेव तत्त्व यतस्सर्वोऽपि भावो विनश्यति । यश्च विनाशी स मिथ्या स्वाप्नवत् । अत. सर्ववस्तूना आद्यन्तयोरभावमात्रतात् मध्येक्षणिकसत्त्व सावृत्तिकम् । न पारमार्थिकं बन्धादि । तत. किं केन वध्यत इत्यर्थः । भावाना विनाशित्वे हेतुर्वस्तुधर्मत्वाद्विनाशस्येति । स्वभाव विहाय न पदार्थस्तिष्ठतीत्याशय. । सर्वशून्यतावाद. सर्वात्मना परिपन्थी सर्वास्तित्वावादस्य यथा बुद्धेन प्रवर्तितः । तथा वैदिकं सर्वास्तित्वं साधयितु तेस्तैर्दार्शनिकैस्सोपान भूतास्तत्तद्वादा कल्पिता । तेश्च वैदिकं सर्वास्तित्व सुगम भवतीति । तत्र विज्ञानमात्रास्तित्व वादः प्रथमः । नज्ञान मात्र मस्ति । परन्तु परमाणुसङ्घातरूपाः ये पृथिव्यादयो बाह्या विषयास्ते न प्रत्यक्षविषयास्सन्त्यत्येव ते तथाप्यनुमेयाः इति द्वितीय. । तृतीयस्तु पृथिव्यादीना स्थूलद्रव्याणा परमाणुसङ्घातरूपाणां प्रात्यक्षिकत्व आन्तराणा चित्तचैत्तादीना अनुमेयत्वमिति वादो बैभाषिकाणाम् । बौद्धानन्तराश्च वैशेषिका भवितुमर्हन्ति । ते च वैभाषिकाभिमत परमाणुकारणत्व मभ्युपयन्त माध्यमिकातिरिक्तबौद्धत्रयाभिमत क्षणिकत्वमसहमानाः वस्तुन स्थिरत्व वदन्ति । वैभाषिकाभिमतमाकाशादीना निरूपाख्यत्वं, नित्यत्व संस्कृतस्य तद्व्यति रिक्तस्य क्षणिकत्वं नैरात्म्यं, निरीश्वरत्व निराकृत्य देहेन्द्रियादिव्यतिरिक्तं स्थिरं चेतनमात्मानं जगत्कर्तारमीश्वरमपि सग्ध्यन्ति । बौद्धा इव वैशेषिका अपि अनुमानस्य प्रमाणतामङ्गीकुर्वन्ति । बौद्धास्तु चार्वाक प्रदर्शितव्यभिचारशङ्का भीता न सर्वत्रानु मानस्य प्रामाण्यमिच्छन्ति । किन्तु यत्र व्यभिचारशङ्काया नावकाशस्तत्रैव । सच यत्राविनाभावस्सुग्रहस्तत्रैव । तादात्म्यतदुत्पत्त्योच्छाविनाभावग्राहकत्वम् । तत्र व्यभिचारशङ्काया अनुन्मेवादितिवदन्ति । वैशेषिकास्तु व्यभिचारग्रहाभावस्सह चारग्रहच्छ व्याप्तिग्रहो पायः । यत्रव्यभिचार शङ्कोन्मीलति सा च तर्कणापनेया इति वदन्तोऽन्यत्रापि अनुमानं प्रवर्तत इति प्राहुः ।

द्वयो वादयोः परमाणुकारणत्वसाम्येऽपि अनुमानस्य तादात्म्य तदुत्पत्तिव्यतिरिक्तस्थले प्रामाण्याभ्युपगमेन वैशेषिकमते आकाशात्मनो रीश्वरस्य वेदप्रामाण्यस्य च सिद्धि । अयमेवास्योच्छ्रायहेतु. ।

तदनन्तराश्च साङ्ख्या । तेच न परमाणवो जगत्कारणम् । किन्तु प्रधानमेव । अजामेकामित्यादिश्रुतेः । नचेश्वरानभ्युपगमे नैतेषां जघन्यता शङ्क्या । लोकव्यवहारसिद्धस्येश्वरनिषेधस्यानुवादमात्रं साङ्ख्यतन्त्रेक्रियते । अनुवादश्चैश्वर्य वैराग्य जननाय सम्भवतीति साङ्ख्यप्रवचनभाष्ये उक्तम् । निरीश्वरवादे च न साङ्ख्यदर्शनस्य ता पर्यम् । असत्यम प्रतिष्ठन्ते जगदाहुरनीश्वरमिति निरीश्वरवादस्य निन्दितत्व.त् । अतोऽस्मिन्नेव शास्त्रे व्यावहारिकस्येश्वर प्रतिषेधस्य अनुवादौचित्यात् । इति ।

एतदुक्त भवति । यथा बौद्ध दर्शनाना सर्वात्मनाऽप्रामाण्य न तथा साङ्ख्यादि दर्शनानाम् । अतएव "नास्ति साङ्ख्यसमं शास्त्र नास्ति योग सम बलम् । अत्र वस्सशयो माभूत् ज्ञान साङ्ख्य पर मतम् ।।" अक्षपादप्रणीते च काणादे साङ्ख्य योगयो. । त्याज्य श्रुतिविरुद्धोंऽशः श्रुत्यैकशरणैर्नृभिः ।। जैमिनीये च बैयासे विरुद्धोशो न कश्चन । श्रुत्या वेदार्थविज्ञाने श्रुतिपारगतौ हि तौ ।।" इति पाराशरोपपुराणादिभि. ब्रह्ममीमासायाः ईश्वरांशे बलवत्तम् । एवमभ्युपगम प्रौढवादिना साङ्ख्यशास्त्रस्य व्यावहारिकेश्वर प्रतिषेधपरतया ब्रह्ममीमासा योगाभ्यां सह न विरोधः । अभ्युपगमवादश्च शास्त्रे दृष्टः । यथा विष्णुपुराणे - एते भिन्न दृशां दैत्याः विकल्पाः कथिता मया । कृत्वाभ्युपगम तत्र सङ्क्षेपः श्रूयता मम ।।" इति । एवमन्वारुध्यवादमाश्रित्यास्तिकदर्शनाना प्रामाण्यसमन्वयश्चसम्भवति ।

अथ प्रकारान्तरेणापि तेषा प्रामाण्यं समन्वश्च सम्भवति । पापिनां सम्यग्ज्ञान प्रतिबन्धार्थमेवास्तिकदर्शनेष्वरं शतश्श्रुतिविरुद्धार्थव्यवस्थापनम् । अतएव तत्तदंशेषु तेषामप्रामाण्यम् । श्रुतिस्मृत्यविरुद्धांशेषु प्रामाण्य च । ब्रह्ममीमासापेक्षितार्थ समर्पकतया तदेकवाक्यता च । ब्रह्ममीमासार्थतयाऽक्लप्तस्यापि शास्त्रस्य तदर्थतया स्वीकार स्सम्भवति । यथाहुः - "अतदर्थकतयाक्लृप्तमपि योग्यमपेक्षितम् । तादर्थ्यमर्हतिग्रामे कल्प्ये पूर्वतटाकवत् ।।" इति । अतएव पद्मपुराणे तेषा निन्दाप्युपपद्यते ।

"शृणु देवी प्रवक्ष्यामि तामसानि यथाक्रमम् । येषा श्रवणमात्रेण पातित्यं ज्ञानिनामपि ।। प्रथम हि मयैवोक्तं शैव पाशुपतादिकम् । मच्छक्त्याविशितैर्विप्रैः सप्रोक्तानि तत परम् ।। कणादेनतु सम्प्रोक्त शास्त्र वैशेषिक महत् । गौतमेन तथान्यायं साङ्ख्यं य कपिलेन वै ।। द्विजन्मना जैमिनिना पूर्व मेवा यथार्थतः । निरीश्वरेण वादेन कृतं शास्त्र महत्तरम् ।। धिषणेन तथा प्रोक्त चार्वाकमतिगर्हितम् । दैत्याना नाशनार्थाय विष्णुना बुद्धिरूपिणा ।। बौद्धशास्त्रमसत्प्रोक्त नग्न नीलपटादिकम् ।। मायावादमसच्छास्त्र प्रच्छन्नं बौद्ध मेव च । मयैव कथित देवि कलौ ब्राह्मण रूपिणा ।। अपार्थ श्रुतिवाक्याना दर्शयन् लोकगर्हितम् । कर्मस्वरूपत्याज्यत्वमत्र च प्रतिपाद्यते।। सर्वकर्मपरिभ्रंशान्नैष्कर्म्य तत्र चोच्यते ।। परात्मजीवयोरैक्य मयात्र प्रतिपाद्यते । ब्रह्मणोऽस्य पर रूप निर्गुण दर्शित मया । सर्वस्य जगतो ऽप्यस्य नाशनार्थं कलौ युगे ।। वेदार्थवन्महाशास्त्र मायावादमवैदिकम् । मयैव कथितं देवि जगता नाशकारणादिति ।। एवञ्च नकस्याप्यास्तिकशास्त्रस्याप्रामाण्यम् । नवा तेषा परस्परविरोध ।

ननु ब्रह्ममीमांसायां यथा साङ्ख्यशास्त्रं निराकृतं तथात्रापि शास्त्रे वेदान्तिमत निराकरणेन न वेदान्तिमतैकवाक्यतास्य शास्त्रस्येति चेत् । वेदान्तिमतस्यात्रा निराकरणात् । अतएव साङ्ख्य प्रवचनभाष्ये विज्ञान भिक्षुणा " विंशैकविंशद्वाविंशेस्सूत्रेस्त्रिभिः । नात्र ब्रह्ममीमासा सिद्धान्तो निराकर्तव्यो निराक्रियत इति न भ्रमः कर्तव्यः । ब्रह्ममीमांसाया केनापि सूत्रेणाविद्यामात्रतो बन्धस्यानुक्तत्वात् । यत्तु वेदान्तिब्रुवाणामाधुनिकस्य मायावादस्यात्रलिङ्ग दृश्यते तत्तेषामपि विज्ञानवाद्येकदेशतया युक्तमेव । "मायावादमसच्छास्त्रं प्रच्छन्नं बौद्धमेव च । मयैवकथितं देविकलौ ब्राह्मणरूपिणा ।।" इत्यादि [पद्मपुराणस्थ शिववाक्यपरम्पराभ्यः । न तु तद्वेदान्तिमतम् । "वेदार्थवन्महाशास्त्रं मायावादमवैदिकम् " इति तद्वाक्यशेषात् । एतेन वेदान्ति मतत्वेन [साङ्ख्यादिभि· मायावादिमतमेव स्वीकृत्य] खण्डितत्वेन मायावाद एव शारीरिकशास्त्रप्रणेतुर्बादरायणतात्पर्यविषय इति वक्तु. व्यासतात्पर्यनिर्णयकारस्य उमामहेश्वरशास्त्रिणो वचन न श्रद्धेयम् ।

एवं साङ्ख्य शास्त्रस्य ब्रह्ममीमांसयाऽपि विरोधेऽपि । अब्रह्मात्मकस्य स्वतन्त्रस्य प्रधानस्य जगत्कारणत्वकथनात् साङ्ख्यशास्त्रानुक्त ब्रह्मात्मकत्व शास्त्रैकसमधिगम्य स्वीकृत्य शारीर-

(शेष पृष्ठ ३९ पर)

जगत् कारण - नारायण

(ले० वैकुण्ठवासी ला० श्रीरङ्गनारायणदास, बदायूँ)

ते दक्षिणामूर्ति मुखास्फुरन्ति यच्छक्ति
लेशाव्यपदेश्यवाच: ।
देवस्समो वाग्मिमुखप्रसन्नो जिह्वाग्रसिंहास-
नमभ्युपैतु ॥

आप लोगो को यह बात खूब अच्छी तरह जान लेना चाहिये कि धर्म के विषय में यदि कोई बात जानने की इच्छा है—तो हम लोगो को सबसे बढिया जरीया है वेद । वेद ही हम लोगो का सबसे श्रेष्ठ प्रमाण है। वेद को अलग करके दूसरी कोई पुस्तक प्रमाण नहीं मानी जा सकती। वेद को साथ लेकर ही दूसरी पुस्तकें प्रमाण मानी जा सकती हैं। जिस प्रकार एक मुसलमान की सबसे श्रेष्ठ पुस्तक कुरान शरीफ है। जिस तरह एक ईसाई की सबसे उत्तम धार्मिक पुस्तक बाइबिल है। जिस रूप से शिक्ख लोग ग्रन्थ साहब को महत्व देते हैं, उसी प्रकार हम सनातन धर्मी हिन्दुओ को वेद मान्य हैं। जिस तौर पर कुरान शरीफ को न मानने वाला मुसलमान नहीं कहला सकता। मुसलमान कहलाने का अधिकारी नही हो सकता, उसी प्रकार वेदो को न मानने वाला हिन्दू कहलाने का अधिकारी नहीं।

अस्तु वेद चार हैं। ऋग्वेद एक, सामवेद दो, यजुर्वेद तीन, अथर्वण वेद चार। वेदो के विभाजन (तकसीम) करने का एक तरीका तो यह हुआ। दूसरे तरीके से वेदो के दो विभाग सिर्फ किये जाते है। पूर्व भाग में चारो वेदों की सहिताऐं शामिल हैं। उत्तर भाग में उपनिषद् और आरण्यक शामिल है। पूर्व भाग में कर्म-काण्ड का विषय है। यह यज्ञादिक का विधान है। उत्तर भाग में परमात्मा और जीवात्मा के स्वरूप का विषय है। यज्ञादिकों से ईश्वर का आराधना किया जाता है। अतः वेद के पूर्व भाग में ईश्वर की आराधना का विषय है। वेद के पर भागमें आराध्य ब्रह्म का विषय है। वेद जितनी ही उच्चकोटि की वस्तु है उतना ही उसका पढ़ना कठिन है। वेद का अर्थ करना आसान काम नहीं। जब तक सारे वेद का अध्ययन न कर लिया जाय तब तक वेद के किसी एक मंत्र का, वेद के एक वचन का अर्थ शुद्ध नहीं हो सकता। इसके अतिरिक्त इस मनुष्य में भ्रम प्रमाद आदि अनेक दोष भी रहते हैं, सामने रस्सी पडी है, मनुष्य उसको सर्प समझकर डरने लगता है। यह है भ्रम, खिचड़ी चूल्हे पर चढ़ा कर किसी से बात करने लगे, बातें करते-करते लापरवाही से खिचड़ी जल गई यह है प्रमाद। भ्रम प्रमाद आदि दोषों में भरे हुए मनुष्य से वेद का सही सही अभ्रान्त अर्थ होना कठिन है। सर्व शाखा प्रत्यय एक कहावत है। वेदमें एक जगह एक वचनका अर्थ हमने किया, कैसे हम अपने किये अर्थ के विषय में यह दावा कर सकते हैं कि यह अर्थ वेद के अन्य स्थलो में आये हुए मन्त्रो के अर्थ के अनुकूल है। कैसे यह कहा जा सकता है कि हमारा किया हुआ यह अर्थ वेद के किसी दूसरे वचन से विरोध नहीं खायगा। इसी वास्ते महाभारत में एक जगह यह कहा है कि वेद का अर्थ स्मृति इतिहास और पुराण की सहायता से करे क्योकि अल्प श्रुत आदमी से वेद को हमेशा यह डर लगा रहता है कि कहीं यह मुझे ठग न ले, भ्रम प्रमाद आदि दोषों से भरा यह व्यक्ति जरा देर में अनर्थ कर सकता है। ऋषियों ने इसीलिये हमारी मदद को स्मृतियाँ बनाई। मनुस्मृति उनमें मुख्य है। महर्षि याज्ञवल्क्य की बनाई याज्ञवल्क्य स्मृति भी बहुत महत्वशाली स्मृति है। महर्षि हारीत की हारीत स्मृति भी बहुत मान्य है। पराशर ऋषि की पाराशर स्मृति भी सर्व मान्य स्मृति है।

इतिहासो में भी वाल्मीकि रामायण और महाभारत बहुत मनोहर ग्रन्थ हैं। इसके अतिरिक्त ऋषि लोगों ने पुराण बनाए। पुराण

(शेष पृष्ठ १२ पर)
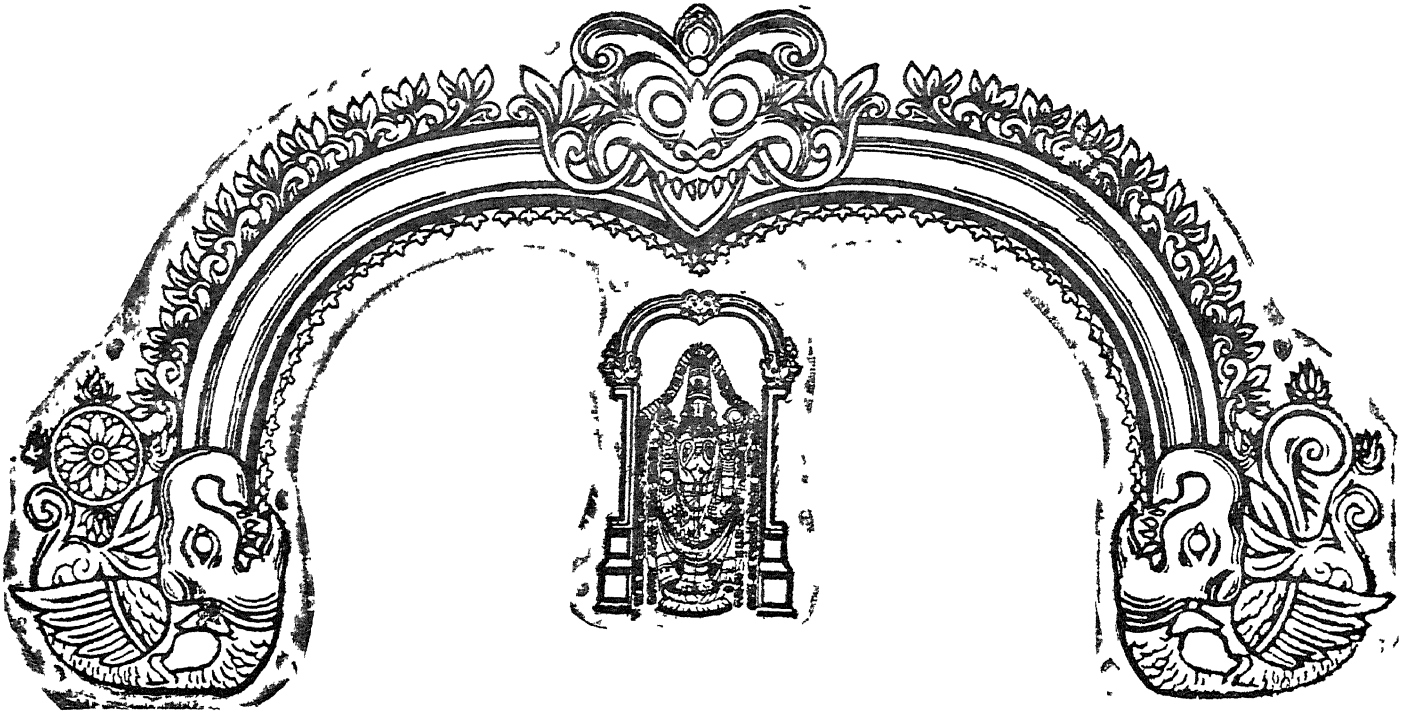
तिरुमल – यात्रियों को सूचनाएँ

भगवान बालाजी के दर्शन

ति. ति देवस्थान को यह विदित हुआ कि कुछ धोखेबाज व्यक्ति यात्रियों से पैसे लेकर भगवान के दर्शन शीघ्र ही करवाने का वादा कर रहे हैं।

देवस्थान यात्रियों को विदित कराना चाहता है कि जहाँ तक सभव हो एक सयत एवं क्रम पद्धति में भगवान बालाजी के दर्शन कराने का भरसक प्रयत्न कर रहा है। प्रतिदिन दस हजार से अधिक यात्री भगवान बालाजी के दर्शन करने आते हैं और दर्शन की सुविधा केलिए दिन में १४ घंटे का समय मदिर का द्वार खोल दिया जाता है जिस में ११ घटे सर्वदर्शन केलिए नियत है। यदि यात्रियों की भीड अधिक हो तो क्लोजड षेड्स से और अधिक न हो तो सुरक्षित महाद्वार से दर्शन का प्रबध किया जा रहा है।

वे यात्री जो समय के अभाव, अस्वस्थता अथवा अन्य किसी कारणवश क्यू में खडे नही सकते वे प्रति व्यक्ति रु २५/- मूल्य का टिकट खरीद कर मंदिर के अन्दर ही ध्वजस्तंभ के पास से क्यू में शामिल हो सकते हैं जिस मे कि उन को ५ मिनट के अन्दर ही भगवान के दर्शन प्राप्त हो सके।

यात्रियों से ति. ति देवस्थान का निवेदन है कि वे बाहरी व्यक्तियों की सहायता से दर्शन प्राप्त करने का प्रयत्न न करे। शीघ्र दर्शन की सुविधा केलिए ति ति. देवस्थान के द्वारा जो उत्तम प्रबंध किये गये हैं, कोई कमी व्यक्ति भगवान का दर्शन उससे शीघ्रतर रवाने में असमर्थ है। अत: कृपया यात्रीगण ऐसे धोखेबाजों की झूठे वायदों से हमेशा सतर्क रहें।

भगवान के दर्शन प्राप्त करने में जो विलंब और प्रतीक्षा करने से जिस सहनशीलता का अभ्यास होता है, वह तो कलियुगवरद श्री वेंकटेश्वर के दर्शन प्राप्त करने केलिए अपेक्षित ही है और वह एक प्रकार की तप साधना भी है जिस के द्वारा भगवान का सपूर्ण अनुग्रह प्राप्त होता है।

कार्यनिर्वहणाधिकारी,
ति. ति. देवस्थान, तिरुपति.

वरदायी वामन
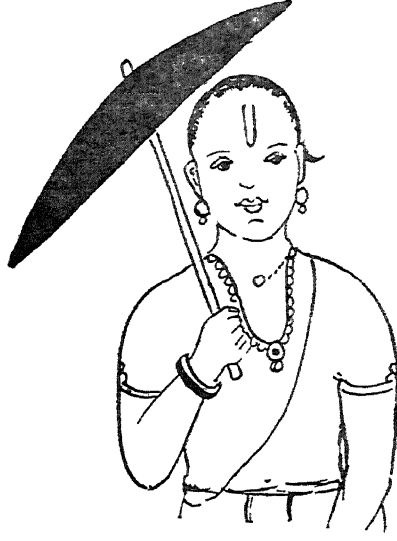
ऋषिओं का राजा था कश्यप
आदर करते थे उनका सब क्षत्रप
पतिव्रता अदिति उनकी पत्नी थी
पति सेवा की में वह सदा निरत थी।
सन्तान के बिना चिरकाल वे दुःखी रहे
जनकल्याण और तपस्या में मग्न रहे
जगत्कारण हरि ने सोचा "मै ही उनका पुत्र बनूँ"
"अपने भक्तों को मै कैसे असहाय दशा में छोड़ूँ"।
उनका पुत्र होकर हरि ने भू पर अवतार लिया
दंपती ने उसको निधि सा पाकर अति हर्ष किया
वटु ने कमडलु, जनेऊ अजिन आदिको मुनिओं से लिया
अमरों ने अपने मन के भयको तब त्याग किया।
कर्तव्य मग्न वामन बलि की यज्ञशाला में गए
अहकार मग्न बलि उनके स्वागतार्थ सिद्ध हुए
ध्यान मग्न गुरु शुक्रजी मुग्ध होकर खडे हुए
स्वार्थ मग्न देवता लोग अंबर में आ जमा हुए।
शुक्र ने कहा, बलि! ये हरि हैं, तुम को ठगने आए हैं
तुमने सत्कार में इनको अर्घ्य और पाद्य दिये हैं
जो भी वे माँगो बलि! मत दो तुम उसको
पश्चात् तुम पछताओगे देकर दान में सबको।

बलिने कहा "मै दानी हूँ" "रोको मत" गुरुवर,
"धन्य हूँ मै" यहाँ आया है स्वय गिरिधर
ठगे वह मुझे कुछ भी न मन में होगा क्लेश
सच कहता हूँ "न खो बैठूँगा यश का भी लेश।
शुक्र ने कहा "तुम दानी और मानी हो,पर हठी हो
दैत्येन्द्र हो, राजराज हो, पर राजनीतिज्ञ नहीं हो
सच्चे राजा लोग संकट में किंचित् राजनीति न से फिसलते
तुम तो सकट में सुख से दुःख के गर्त में गिरते।
शिष्य को हठी देख शुक्र भ्रमर सा बदल गया
कमंडलु में छिपकर जल को बाहर आने से रोक दिया
कपटी वामन ने नीर न पाकर दर्भ हाथ में लिया
उससे शुक्र को एक आँख से चुभोकर काना बना दिया।
हरि ने माँगी तीन पग की भूमि बलि से तब
बलि ने कहा "तथास्तु" वह था झूठा कब ?
एक पग से आकाश और तदुपरिस्थ लोकों को नाप लिया
एक से पृथ्वी और उसके अधस्थ लोकों को नाप लिया
पवित्र पद को बलि के सिर पर रखकर हरि ने कहा
"दानी हो "अधस्थ देशों का शासक बनकर रहो, अहा!
सविनय कहा बलि ने "धन्य हूँ तेरे चरणारविन्द ने मुझे छुआ
किस दानी को मिला यह भाग्य ? यह कहाँ और कब हुआ ?

के. यन्. वरदराजन्, यम्.ए., बि.इडि
कल्पाकम्

(पृष्ठ ९ का शेष)

१८ है। उसमें श्रीविष्णु पुराण, श्रीमद्भागवत, पद्मपुराण बहुत प्रसिद्ध हैं। स्मृतिओ में वेद के पूर्व भाग की व्याख्या है। इतिहास पुराण में उत्तर भाग की व्याख्या है। स्मृतियाँ एक प्रकार से कानून है। इतिहास तथा पुराणो में उस कानून की नजीरें हैं। ऋषियो ने हमारी रास्ता को आसान बनाने के लिये मीमांसा शास्त्र रचे। वेद के पूर्व भाग में मंत्रो के अर्थ में जो पारस्परिक विरोध मालुम पडता है— उसको दूर करने के लिये पूर्व मीमासा बनाई गई। वेद के उत्तर भाग अर्थात् उपनिषदो में बहुत से ऐसे बचन दिखलाई पड़ते हैं जो एक दूसरे से विरुद्ध है। ऐसे वचनो का विरोध दूर करने के लिये श्रीव्यासजी ने उत्तर मीमांसा बनाई। पूर्व मीमांसा और उत्तर मीमासा दोनों ग्रन्थ सूत्र बद्ध है, सूत्र वह होते है, जिसमें थोड़े से थोड़े शब्दो में अपना अभिप्राय प्रकट किया जाता हो। उत्तर मीमांसा को शरीरिक सूत्र भी कहा करते है। कोई कोई उत्तर मीमासा को व्यास सूत्र भी कहते है। कोई कोई इसको वेदान्त सूत्र के नाम से पुकारते है।

वेदान्त सूत्र बडे महत्व की चीज है। सनातन धर्म के सभी आचार्यों ने ब्रह्मसूत्रो पर भाष्य रचे हैं। स्मार्तमत के प्रधान आचार्य श्रीशङ्कराचार्य ने अपने मत को प्रमाणित करने के लिये बडा सुन्दर शारीरिक भाष्य बनाया हैं। श्रीवैष्णव सम्प्रदाय के प्रधान आचार्य श्री रामानुज ने भी अलग भाष्य रचा जो श्रीभाष्य के नाम से प्रसिद्ध है। इस भाष्य के द्वारा उन्होने श्रीवैष्णव सिद्धान्त को परिपुष्ट किया। शैव मतके एक आचार्य श्रीकंठ ने भी एक भाष्य रचा। वैष्णवमत की शेष तीनो शाखाओ के आचार्यो ने ब्रह्मसूत्रो पर भाष्य बनाए। उनकी प्रसिद्धि माध्वभाष्य, वल्लभ-भाष्य और निम्बार्कभाष्य के नाम से हुई। रामानुज 'मध्व' 'वल्लभ' और निम्बार्क यह चार वैष्णव सम्प्रदायें है। रामानुज सम्प्रदायी वैष्णव श्रीवैष्णव कहलाते है। इतर लोग केवल वैष्णव कहलाये जाते है। ब्रह्मसूत्रो के सभी भाष्यों में, श्रीशङ्कराचार्य का शारीरिक भाष्य और श्रीरामानुजाचार्य का श्रीभाष्य बहुत प्रसिद्ध है। इतर भाष्य इनकी टक्कर के नहीं।

इतना जान लेने के बाद आज हमको विचार करना है कि शास्त्रो में मुमुक्षु पुरुष के लिये उस आदमी के लिये जिसे मोक्ष पा लेने की इच्छा हो कौन से देवता की उपासना करनी चाहिये। उपनिषदों में एक जगह कहा है कि 'कारणन्तु ध्येयः' कारण ही ध्येय हो सकता है। जिससे इस जगत् की उत्पत्ति हुई है वही उपास्य है। तो देखना यह है कि जगत् की उत्पत्ति हुई किसमे, जिससे उत्पत्ति हुई है वही कारण है। वही ध्येय है। वही उपास्य है। इस परिदृश्यमान जगत् का कारण क्या है? इस पर सभी सिद्धान्तिओ ने विचार किया है। यह विषय कुछ नवीन विषय नहीं है। इस विषयमें वेदान्ती ही नहीं समस्त मतावलम्बियो ने वेद ही के आधारसे विचार किया है। केवल युक्तिवाद, केवल दलीलो से काम नहीं लिया। क्योकि उनका कहना है कि युक्तिवाद का अन्त हो सकता ही नहीं और न इस प्रकार युक्ति वाद से कोई सिद्धान्त कायम हो सकता है। श्रीव्यास जी ने अपने वेदान्त सूत्रो में कहा है।

"तर्काप्रतिष्ठानात्" इस सूत्र में यही बात कही है कि तर्क केवल तर्क के जोरो पर सिद्धान्त कायम नही हो सकता।

अब विचारना चाहिये कि वेदो में जगत्कारण वस्तु के विषय में क्या कहा गया है। यह कर्पकाण्ड का विषय नहीं है। अतएव उपनिषदो में ही यह विषय आता है। "सदेव सौम्येदमग्रआसीदेकमेवाद्वितीयम्" यह एक जगत्कारण प्रतिपादक वाक्य है। इदम् — यह दिखाई देने वाला विचित्र रचना सम्पन्न चिद-चिदात्मक जगत् – यह संसार जो हम देखते है यह संसार जिसकी अजब किस्म की बनावट है, यह संसार जो जानदार और वेजान चीजों के मेल से बना है। अग्रे–सृष्टि के पहिले सदेव सत् ही था। सदेव में एव का मतलब यह है कि वह वस्तु सत् रूप में ही थी। असत् रूप में नहीं थी। इससे सत्कार्यवाद की स्थापना होती है। असत्कार्यवाद का निरास सिद्ध होता है। वह सत् शब्द से कहलाई जाने वाली चीज जिस के रूप में यह जगत् सृष्टि के पूर्व में था, एक ही थी। यह बात इस मत्र के एकमेव शब्द से कही गई। इस सबके कहने से यह बात मालुम हुई कि जगत् का उपादान कारण सत् शब्द से कही जाने वाली चीज थी। क्योकि कार्य वस्तु अपनी पैदायशके पहिले उपादान कारणके रूप में ही रहती है। घड़ा एक कार्य वस्तु है। वह घड़ा बनाये जाने के पहिले मिट्टी के रूप में था, इसलिये घड़े का उपादान कारण मिट्टी है। इसी प्रकार जगत् एक कार्य वस्तु है। तो उसकी उत्पत्ति के पूर्व वह उपादान कारण के रूप में

(शेष पृष्ठ २९ पर)

ब्रह्मोत्सव के अवसर पर श्री चिट्टिबाबू जी की संगीत कचेरी

श्रीमद्रामानुजाचार्य - सामाजिक सुधार

हिन्दुओं के तीन महान धर्म-प्रवर्तकों में श्री रामानुजाचार्य का अपना एक विशिष्ट स्थान है। उनको 'उडयवर' या 'इलै पेरुमाल' भी कहा जाता है। आदिशंकरजी के बाद इनका जन्म हुआ। इन्होंने शंकराचार्य के अद्वैतसिद्धांत में थोड़ा हेर-फेर करके, अपने नये सिद्धांत का प्रतिपादन एवं निरूपण भी किया। इनकी भक्ति सात्विकी थी। सामाजिक उन्नति एवं निम्नवर्गों के हित केलिये भी इन्होंने कुछ कार्य किये। उनकी धार्मिक भावना उदार थी। सामाजिक उन्नति के सामने इन्होंने अपनी मर्यादा, प्रतिष्ठा, एवं वैयक्तिक सुख आदि को तुच्छ समझा। नीचे दिये उदाहरणों से हमें यह बात स्पष्ट हो जाती है।

श्री रामानुज का जन्म तब हुआ जब समाज में चार वर्णों के नियमों का पालन कठोरता से किया जाता था। केवल सवर्ण एवं अग्रकुल वालों के लिये ही आध्यात्मिक बातों की आवश्यकता मानी जाती थी। शूद्र कुल वालों को उन्होंने मुक्ति के गूढ़ एवं महत्वपूर्ण बातें जानने के लिये अयोग्य समझा, तो अस्पृश्य-माने जानेवालों की स्थिति के बारे में तो हम अंदाज ही कर सकते हैं। वैष्णवों के लिये तिरुमंत्रम् बडा महत्वपूर्ण है। उसके सदा मनन एवं जप करने से, सारे लौकिक बंधन टूट जाते हैं तथा आध्यत्मिक भूख मिटती है। इतना ही नहीं, जन्मराहित्य एवं मुक्ति-प्राप्ति भी होती है।

श्री एम. लक्ष्मणाचार्युलु.
गुतकल.

'तिरुमंत्र' की महिमा ने श्रीरामानुज को खूब प्रभावित किया। तब तक वे युवक हो चुके थे। उन में सामाजिक बंधन, धार्मिक नियमों का उथल-पुथल मचता था। उनको यह बात समझ में नहीं आता था कि समाज के अन्य अंग इन मंत्रो से क्यों वंचित है?

मंत्र का उपदेश करने के बाद गुरूजी ने कहा कि इसे भव-सागर को पार करने के लिए बेड़ा के सिवा और कुछ नहीं समझना चाहिये। निम्न जाति के लोगों के लिये यह अनावश्यक है। उनके दैनिक जीवन के कार्य-कलापों से इसका संबंध कुछ भी नहीं है।" साथ साथ उन्होंने यह धमकी भी दी कि अगर रामानुज किसी अधिकारी एवं अयोग्य को इस मंत्र के बारे में बतावे, तो उनको यमपुरी में तरह तरह की यातनाओं को भोगना पड़ेगा।

इन सभी बातों को खूब सोच-विचार करके रामानुज ने निश्चय किया कि जो भी हो मुक्ति कुछ इने गिने लोगों की ही संपत्ति नहीं है। उस असीमसत्ता की नजर में सब बराबर हैं। सभी मुमुक्षु बन सकते हैं। इस विषय में जातिगत व धर्मगत भेद नहीं करना चाहिए। ऐसा सोचकर वे दूसरे दिन एक बड़े मंदिर के पास आये, जो चौरास्ते के पास था। उसे देखते ही उनको एक उपाय सूझगया। झट आलय शिखर चढकर उस रास्ते से गुजरनेवाले लोगों को चिल्लाचिल्लाकर बुलाया और उन्होंने कहा कि यह शरीर नश्वर है। पता नहीं यह बुलबला कब टूट जाएगा। मोक्ष-प्राप्ति के लिए मैं आप को तिरुमंत्र का उपदेश दूंगा, जिसे मैंने अपने गुरुजी से प्राप्त किया है। इसे सीखने से लौकिक एवं अलौकिक सुखों की प्राप्ति भी होगी।" ऐसा कहकर उस महान त्यागी, आदर्श व्यक्ति, एवं सामाजिक हितैषी ने तिरुमंत्र को वहाँ इकट्ठे हुए हजारों लोगों को उपदेश दिया। जनता यह देखकर चकित होगयी। इस अप्रत्याशित घटना से, उन्होंने समझा कि मानो सारे पाप धुल गये। युवक रामानुज को धन्यवाद देकर सभी ने बिदा लिया।

इस प्रकार रामानुज ने 'नरक' की भी परवाह न करके अपनी वैयक्तिक मान और अपमान खासकर गुरुजी के क्रोध के बारे में भी विचार न करके सामाजिक उन्नति एवं सुधार के लिए प्रयत्न किया।

दूसरी घटना उस समय हुई जब वे शादी-शुदा होकर गृहस्थ जीवन बिता रहे थे। पत्नी

आगामी फरवरी में मनाये जानेवाले स्वाध्याय ज्ञान यज्ञ के लिए यज्ञ वाटिका को जोतते हुए देवस्थान के आस्थान विद्वान प. श्री जगन्नाथचार्युलु जी।

का नाम था तजमाबा, जो रूपवती गुणवती एव प[illegible]

सुख मे उन दोनो का जीवन गुजरता था। तजमाबाजी श्री रामानुज के हर एक काम मे अपना हाथ बॉटती थी। मगर एक-दो विचारो मे उन दोनो मे भिन्नता थी। रामानज के लिए वह व्यक्ति आदरणीय था जो भागवतो का आदर करता हे, जिसके मन में सदा उस परमात्मा श्रीमन्नारायण के पवित्र-नाम की गूँज हो और जिसका जीवन सरल हो। भले ही वह निम्नवर्गीय हो, वह श्री रामानुज की प्रशना का पात्र बन जाता था। मगर तंजमाबाजी ब्राह्मणो या उच्च कुल के पक्ष में थी। वे कहती थी कि आदमी पर जन्म जात एव वातवरणो का प्रभाव खूब पडता है। इस दृष्टि से निम्न वर्ग या अस्पृश्य आदरणीय नहीं होगे। क्योकि उनके दैनिक कार्य ही ऐसे होते है, उनका संस्कार ही ऐसा होता है, जिसको उच्च कुलवाले हेय समझते हे। तजमांबाजी अनुभव के अनुसार वे (निम्न जाति के लोग) बड़ेलोगो की इज्जत करने, व्यवहार करने की तरीका भी नहीं जानते। कुएँ से पानी निकालते समय उनकी बाल्टी पर एक निम्नवर्गीय. अस्पृश्य औरत की बाल्टी से कुछ बूँद छिटक [illegible] ने उस औरत का पति किसी विलक्षण वै[illegible] से कम नहीं थे। यह तजमाब[illegible] मालुम थी, परतु उनके परपरागत सस्कार एव धार्मिक नियमो ने उसे आग बबूला कर दिया। उसको खरी खोटी सुनाकर वे घर चली गयी। यह बात जानकर पत्नी को समझाने एव मनाने की अस-फल कोशिश श्री रामानुज ने की। इस से मालुम होता है कि रामानज निम्नवर्गो के प्रति उदार थे।

दूसरे बार श्री रामानुज कहीं जा रहे थे। रास्ते मे एक वैष्णव स्वामी मिले थे, जो जाति के निम्नवर्ग के थे। मगर वे पड़ित, ज्ञानी, एव भगवान एव भागवतो के भक्त थे। उनको देखकर रामानुजजी को ऐसा लगा कि वे थके और भूखे हे। घर ले जाकर बढिया खाने की बात रामानुजजी ने सोचा, मगर कार्य की व्यस्तता एव जरूरी से उन से प्रार्थना की कि वे सीधा घर जावे और वहाँ तजमांबाजी हे। उनसे बढिया खाना आदर के साथ परोसा जाएगा। यह कहते कहते वे यह भूल गये कि पत्नी के विचार निम्न वर्ग के अस्पृश्य के विषय में किस प्रकार थे। उन्होने समझ लिया कि पत्नी मेरी बात मान लेगी और इनको खिलायेगी।

वार्षिक ब्रह्मोत्सव के अवसर पर श्री सध्यावदनं श्रीनिवास राव की सगीत कचेरी

वह भक्त रामानुजजी के घर गये। सारी बात जानकर तजमाबाजी को पति की इस आज्ञा पर गुस्सा आया। पहले उससे नहीं कहना ही चाहा। लेकिन आये हुए अतिथि की भूख एव थकावट का अदाजा लगायी तथा पति की इज्जत को नजर में रखकर उसने उसे "अस्पृश्य अतिथी" समझकर बाहर के बरामदे मे भोजन दिया। बेचारा उस व्यक्ति ने उसे ही अहोभाग्य समझकर, भोजन को भगवान का प्रसाद समझकर खा लिया। इतने में तजमाबाजी ने आकर उस पूण-पत्तल को खुद उठाकर बाहर फेंक देने की प्रार्थना उस अतिथि से की। बाद में उनके चले जाने के बाद हल्दी-पानी से उस जगह को साफ किया, फिर नहाकर खाना पकाया। थोडी देर में श्री रामानुज आये। पूछताछ करने पर सब मालुम हो गया। बरामदे में हल्दी-पानी से शुद्ध की गयी जगह भी दिखाई पड़ी। पत्नी पर खूब चिढ गये - उनकी खरीखोटी सुनायी। कहते हे - इसी के कारण पत्नी को रामानुजजी ने माइके भेज दिया और फिर वापस बुलाया भी नहीं।

कहने का मतलब यह है कि जैसे कबीर ने कहा 'जात न पूछो साधु की, पूछ लीजिये ज्ञान को श्री रामानुज स्वयं अमल में लाते थे। धनुर्दास को सुधारना भी इस के लिए उदाहरण के रूप में ले सकते है। हम यह भी कह सकते है कि वे अन्यहिन्दू धार्मिक प्रवर्तक एव प्रचारको से उदार थे। सामाजिक हित के सामने उनका अपना वैयक्तिक सुख तुच्छ था। सचमुच वे अमर एव प्रातः स्मरणीय है। ✡

जप करो राम नाम

श्री क एस. शकर नारायण, कल्पवकम्

शङ्कर का प्रिय नाम पावन राम
शनीश्वर कर सकता न कोई काम ।
हनुमान जप करता राम नाम
हमेशा उससे भागता डरकर काम ।
जानकी का प्राणेश्वर श्री राम
जानते हम राम ही घनश्याम ।
मेंढक को मोक्ष दिया, हे राम !
मेहरबान कर मुझपर हे राम !
जप करना राम नाम अच्छा काम
पाप मारना राम नाम का काम ।
राम नाम कहना हमारा श्रेष्ठ काम
देगा वह हमे बल जैसे भीम ।
लक्ष्मण का प्रिय भाई है राम
लक्ष्य है मेरा, प्रचार करना नाम ।
सौभाग्य हमारा जप करना राम नाम
सौभाग्य देना जरूर हमे सीता राम ।
राम नाम का क्या है दाम ?
राम हमारे जीवन का है नीव ।
राम नाम से क्या है लाभ ?
राम नाम से राम ही लाभ !
राम और नाम में क्या है अन्तर ?
राम और नाम ही होता रूपान्तर ।
वनवास में रहा चौदह वर्ष राम
मनवास करेगा सदा वह राम ।
राम नाम कहकर करो सब काम
राम नाम से सफल होगे सब काम !
मोह भगाता सब का राम नाम
मोक्ष देता सब को राम नाम ।
राम नाम कहने में क्या श्रम ?
राम नाम जपने से कहाँ है श्रम ?
जप करो सदा राम नाम
प्राप्त करो यहाँ राम धाम !

श्री गोविंदराज स्वामी का मंदिर, तिरुपति.

दैनिक-कार्यक्रम

प्रातः	5–00 से 5–30 तक	—	सुप्रभातम्
,,	5–30 ,, 7–00 ,,	—	**सर्वदर्शन**
,,	7–00 ,, 7–30 ,,	—	शुद्धि
,,	7–30 ,, 8–00 ,,	—	तोमाल सेवा
,,	8–00 ,, 8–30 ,,	—	अर्चना
,,	8–30 ,, 9–00 ,,	—	पहली घंटी तथा सात्तुमुरै
,,	9–00 से मध्याह्न 12–30 तक	—	**सर्वदर्शनम्**
मध्याह्न	12–30 से 1–00 तक	—	दूसरी घंटी
,,	1–00 से शाम 6–00 तक	—	**सर्वदर्शनम्**
,,	6–00 से 7–00 तक	–	रात के कैंकर्य
,,	7–00 ,, 8–45 ,,	—	**सर्वदर्शनम्**
,,	9–00 बजे	—	एकांत सेवा ।

अर्जित सेवाओं की दरें

तोमाल सेवा	रु ४–००
सहस्र नामार्चना	रु ६–००
एकांत सेवा	रु ४–००
हारती	रु १–००
विशेष दर्शन	रु २–००

(सिर्फ सर्व दर्शन के समय पर ही प्रवेश)

सूचना:— एक ही व्यक्ति को अनुमति दी जाती है।

श्री गोविंदराज स्वामी के मंदिर से सम्बन्धित अन्य मंदिरों के अर्जित सेवाओं की दरें

१) श्री पार्थसारथी स्वामी का मंदिर
२) श्री वेंकटेश्वर स्वामी का मंदिर
३) श्री आण्डाल का मंदिर
४) श्री पुंडरीकवल्लि तायारु का मंदिर
५) श्री आंजनेय स्वामी का मंदिर —सन्निधि वीथी के पास
६) श्री संजीवराय स्वामी का मंदिर —श्री हथीराम जी मठ

अर्चना. रु. ०-७५.
हारती. रु. ०-२५.

अर्जित वाहन

१)	तिरुचि उत्सव	—	रु ६३–००
२)	बडा शेषवाहन	—	रु ६३ ००
३)	छोटा शेष वाहन	—	रु. ३३–००
४)	गरुड वाहन	—	रु ३३–००
५)	हनुमन्त वाहन	—	रु ३३–००
६)	हंस वाहन	—	रु. ३३–००

भगवान को प्रसाद (भोग) समर्पण

१)	शीरा	—	रु, १५५–००
२)	बघार भात	—	रु ५०–००
३)	दही भात	—	रु ४०–००
४)	पोंगलि	—	रु ५५–००
५)	शक्कर पोंगलि	—	रु ६५–००
६)	शक्कर भात	—	रु ८५–००
७)	केसरी भात	—	रु ९०–००
८)	१/४सोला दोसै	—	रु. ३५–००

धनुर्मास व्रत का महत्व

श्री धारा सुब्रह्मण्यम्

हे ऋषि! एक बार नैमिशारण्य नामक पुण्य क्षेत्र मे शौनकादि महामुनि पौराणिकोत्तम सूत जी मे पूछे – "हे महान्! सभी पापो के निवारणार्थ भुक्ति व मुक्ति प्रदायनी, शुभ-दायक तुलसी प्रभाव को सुनकर हम अत्यत प्रसन्न हुए। अब धनुर्मास व्रत का महत्व सुनना चाहते हैं। कृपा करके बताइए। तब सूतजी ने इस प्रकार कहा - हे मुनि। प्राचीन काल मे ब्रह्म देव अपने पुत्र नारद जी को बताये हुए इस व्रत के वैभव को सुनाता हूँ। ध्यान से सुनिए।

यज्ञादि समस्त पुण्य कार्यो से तथा सकल दानो मे भी बढकर अत्यत महत्वपूर्ण इस धनुर्मास व्रत का आचरण करने से समस्त प्रकार के ऐश्वर्य की प्राप्ति होगा। इससे मिलने वाली पुण्य भी ज्यादा है। इस व्रत का वर्णन समस्त वेदो मे किया गया है। ऐसे लोक प्रसिद्ध इस व्रत के बारे मे बता रहा हूँ, कहकर सूतजी इस प्रकार बोले —हे ऋषि! इसके महत्व के बारे मे कई साल तक वर्णन कर सकते हैं। क्योकि कई पुराणो मे इसके बारे मे चर्चा की गयी है। इसलिए सभी पुराणो के सार को हम बताएंगे, ध्यान मग्न होकर सुनिए।

धनु सक्राति से लेकर एक महीने तक इस व्रत का आचरण करना चाहिए। यज्ञ, जप-तप, होम, अग्निहोत्रादि दैनिक कर्मों का आचरण न करने पर भी, इस धनुर्मास पूजा को करने से, पुनर्जन्म न रहकर, कैवल्य सिद्धि होगा। जो लोग ऐश्वर्य को चाहते हैं, उनके लिए ऐश्वर्य, तीर्थाटन दर्शन की तुल्य फल-प्राप्ति होगी। मदिरा या मास खाना, दाराग्नि को छोडकर, अस्वच्छ भोजन, पतितान्न इनसे प्राप्त होने वाले पापो का नाश हो जायगा। सूर्य या अग्नि की उपासना न करने वाला कोई भी आदमी इस धनुर्मास की पूजा करने पर विष्णु लोक चला जायगा।

अगर कोई आदमी इस पूजा का आचरण न करे, तो उसे भाभी से, मित्र की पत्नी से, गुरु पत्नी से, बहिन से, रजस्वला स्त्री से, मदिरा पान करनेवाली स्त्री से, विधवा स्त्री से
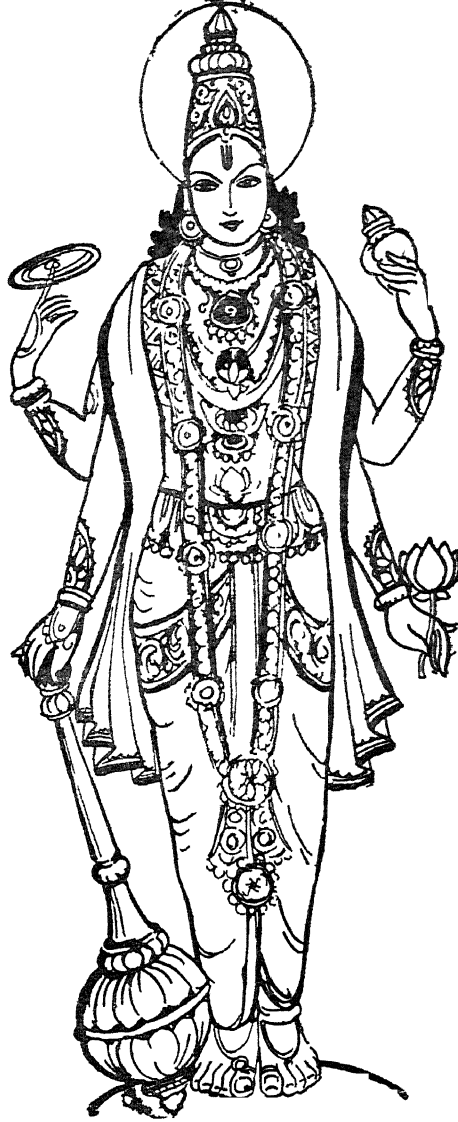
सगमादि करने से मिलने वाले पाप को भोगना पडेगा।

कपिलागो सहस्रेण कन्या द्वादशादानत
यत्फल समवाप्नोति ब्रह्मणे भोजनेकृते ।।

अगर कोई आदमी इस धनुर्मास मे ब्राह्मण को भोजन दान करता है, तो उसे हजार कपिल-गाय, बारह कन्यादान करने से मिलनेवाली पुण्य को प्राप्त करेगा। ब्रह्मलोक, कैलास, वैकुंठादि लोको को दर्शन करने के लिए इच्छुक लोगो को इस व्रतका आचरण करने से सिद्धि होगी।

चतुर्णामपि वेदाना सांगानां परगामिना ।
यत्प्रातः स्नाइना नित्यमग्निहोत्र रतात्मना ।।
नित्यान्न दान व्रतिनां नित्य श्राद्ध रतात्मना ।
ससाक्षि भोजनकृतां नित्यं गोपूजा कारिणां ।।

शास्त्रीय पद्धति मे चतुर्वेदो को पारायण करने वाले, प्रात काल स्नान करने वाले, नित्याग्निहोत्र करने वाले, नित्यान्नदान करनेवाले, निरंतरयाग-होमादि पूजाये करने वाले जितना पुण्य फल को प्राप्त करेंगे, उतना ही इस धनुर्मास व्रत आचरण करने वाले तथा ब्राह्मण लोगो को भोजन खिलाने वालो को अवश्य प्राप्त होगा।

धनुर्मास में ब्राह्मण लोगो को अन्नदान करने से, फल, शाक, ताम्र, कास्य, वस्त्र व ताबूल, धान्यादि दानो के समान पुण्य फल को प्राप्त करेंगे। मानवो को अपने यथाशक्ति हजार, पाच सौ दस विप्र जनो को, घृत युक्त पच भक्ष्य परमान्न, अन्नदान फलदान ब्राह्मण लोगो को तृप्ति जनक भोजन खिलाने से इस भूलोक मे पुत्र मित्र कलत्रादि बधु सुख प्राप्ति, गज रथा-रोहण, इंद्रादि भोगो को प्राप्ति करके "समाना नामुत्तमश्लोकोऽस्तु" के श्रुति के अनुसार अपने बधु जनो मे नाम पाकर, अत्यकाल में पुनर्जन्म रहित ब्रह्म लोक सुख को शाश्वत रूप से पायेंगे।

इस धनुर्मास व्रत के महत्व के बारे मे सुनने वाले ऋषि जनो मे से नारदजी ब्रह्म जी से बोले—हे जनक! इस व्रत का आचरण विधान क्या है? इस के आराध्य देवता कौन है? इसके विधान तथा आराध्य पद्दति के बारे में सविस्तर जानकारी दीजिए।

तब ब्रह्माजी नारदजी के इस प्रश्न का उत्तर सविस्तार देने लगे। ध्यान से सुनिए। हे पुत्र सूर्योदय से पहले ही उठकर, स्नान सध्यादि दैनिक कर्मो की पूर्ति करके, थोडी देर तक गायत्री जप करके, अनतर विष्णु की पूजा करना चाहिए। एकादशीव्रत करनेवाल लोग अल्प द्वादशी के दिन जिस प्रकार दैनिक कर्म करेंगे उसी प्रकार करना चाहिऐ। अत्यत भक्ति श्रद्धा के साथ इस व्रत का आचरण करना चाहिए। इसके अलावा पाच तुलो के समान या उस में से आधा या चौथा भाग से मधुसूदन की मूर्ति बनाकर प्रणाम करके हर दिन पूजा करना चाहिए। धनुः सक्राति से लेकर महीने के अत तक मगल वाद्य नादो से, गोक्षीर शंख में भरकर नारियल के पानी से, पचामृत स्नानो से मधुसूदन स्वामी

श्री आंडाल

जी को हर दिन नियमानुसार अभिषेक करना चाहिए।

स्नानतर गधादि से अलकृत करके, कोमल तुलसीदल व कई प्रकार के सुगन्धित पुष्पो से, सहास्रनामार्चना या अष्टोत्तर पूजा को धूप दीपादि तथा वाद्यो से भगवान श्रीविष्णु की आराधना करना चाहिए।

मधुसूधन स्वामीजी को किये जानेवाले नैवेद्य के बारे में ब्रह्म देव इस प्रकार वर्णन कर रहे हैं। मसूर की दाल के साथ समान भाग के चावल तथा सुगन्ध द्रव्यो को मिलाकर पोगलि को बनाना उत्तम होगा। इसमे से आधा भाग मिलाने से मध्य, तथा उससे भी कम मिलाने से अधमाधम होगा। और कुछ पण्डित लोग चावल के साथ दगुना मसूर की दाल मिलाकर, काला मिरच, हिङ्ग, नमक आदि से सुदर मिश्रिन बनाकर स्वामीजी को भोग समर्पण करेगे।

इस प्रकार पोगलि, कई तरह के पंच भक्ष्य परमान्न, गोक्षीर, नारियल, दही, मिश्री आदि पदार्थो के नैवेद्य, सुगध ताबूल देकर "हिरण्य गर्भ" इति मत्रपूर्वक दक्षिणा, बाद मे कर्पूर हारति, मत्र पुष्प, आत्म प्रदक्षिणा नमस्कार आदि विधिपूर्वक करना चाहिए। हेवम्य! हे नारद! ऐसा पन्द्रह दिन तक जरूर पोगलि नैवेद्य श्री महाविष्णु को समर्पित करना चाहिए।

धनुर्मास मे प्रात काल मे इस पूजा को न मनाने वाले मूर्खो को सातो जन्म तक दरिद्र का अनुभव नरक प्राप्त होगी। सूर्योदय काल उत्तम होगा। मसूर की दाल युक्त पोगलि तथा अन्य भोजन पदार्थ एक दिन का श्री महाविष्णु को नैवेद्य करे तो सहस्र ब्राह्मण का अन्नदान करने का पुण्य फल मिलेगा। इस पूजा के लिए अरुणोदय समय अत्यत उत्तम होगा। तारो के अस्तमय काल मध्यम होगा। सूर्योदयानतर अधम होगा। इस महीने मे प्रात समय गर्म भात श्रेष्ठ होगा। मसूर की दाल मे घी मिलाकर पदार्थ, शक्कर और कई प्रकार के शाक, स्वादिष्ट गोक्षीर परमान्न आदि मे ब्राह्मणो को भोजन देने वालो को काशी, प्रयाग आदि तीर्थ स्थलो मे १०० लोगो को अन्नदान करने का पुण्य फल प्राप्त होगा। अगर कोई आदमी अग्नि को प्रज्वलन करके, शीतबाधा का निवारण करे तो उनका शरीर स्वच्छ काति से प्रज्वलित होगा शीतकाल मे अग्नि का दान अति मुख्य हे।

शीतवातेषु तिप्राय वस्त्र कबलमेववा।
योदद्याति मुनि श्रेष्ठ इहामुत्र सुख लभेत ।।

अगर कोई सज्जन ब्राह्मण लोगो को ठडापन की निवृत्ति के लिए वस्त्रदान या कबल का दान करे तो वे ऐहिकामुष्मिकफल-भोगसुख का अनुभव करेगे।

यह धनुर्मास पूजा की सहस्र जन्मो मे किये जानेवाले पुण्य फलो के कारण मानवो को मिलेगा। इसलिए सभी सुखो की प्राप्ति, पुत्र-पौत्रादि की वृद्धि होगी।

इस धनुर्मास व्रत को हर साल मनाना चाहिए। घोर पाप रूपी पर्वतो के लिए यह एक वज्रायुध हे। इसलिए पर्व दिनो मे या पूजा के दिनो इस धनुर्मासव्रत की महिमा के बारे मे सुनना चाहिए। क्योकि यह भगवान श्री महाविष्णु की पूजा विधान होने के कारण सिर्फ श्रवण करने से भव रोगादि अज्ञान नष्ट हो जायगा। तथा इस गाडाधकार में के नाश होने से ज्ञान प्राप्ति होगी तथा उससे आनद मिल जायेगा। इस धनुर्मास व्रत की कहानी को कैवल्यासक्ति रखकर ध्यानपूर्वक सुनना चाहिए। शीत वातादि के डर से शक्तिहीन को भी हर दिन किसी न किसी समय पर सुनना चाहिए। अगर ऐसा भी न सुन सका तो दशमी, एकादशी, द्वादशी, अष्टमी व पूर्णिमा के दिनो मे हरिकथाएँ सुनना चाहिए। तभी वह पाप से मुक्त होगा। इस धनुर्मास की पूजा का आचरण न करे तो दस जन्मो तक पाप योनियो में पैदा होता रहेगा।

यत्फल सर्वयज्ञेषु सर्वदानेषु यत्फल।
सकृद्धनुर्मासं चरण तत्फल विंदते नर ।
योन कुर्यान्न जानीया द्धनुर्मास व्रतोत्तम ।
पितृनो मातृतश्चैव कुलमेकोत्तर शत ।
पच्यते नरके घोरे यावत्कलि शतत्रय ।।

कम से कम एक बार पूजा करे तो सभी यज्ञ व दानादि पुण्य प्राप्त होगे। महिमायुक्त इन पूजाओ को अगर कोई न आचरण करे तो अपवित्र जन्म लेकर अत्यत पाप भार से जीवन बिताकर, कलियुगात तक नरक यातनओ को भोगना पडेगा।

अगर कोई शरीर से दृढ व स्वस्थ रहकर भी शीतलता के कारण डरकर इस व्रत का आचरण न करता है, उसे क्रिमि कीटकादि जन्तु योनियो में जन्म लेना पडेगा। अगर कोई व्रत की वैभव को दूषण करता है, उसे कई बार जन्म लेकर, पाप जीवन बिताकर, घोर पापाग्नि मे जलकर, अत मे क्रिमि कूप मे जन्म लेकर, कई करोडो सालो तक भी न सुधरेगा।

इतिहासपुराणेषु भूयो भूयो महामुने।
सर्वदैवतु कर्तव्य मिति यद्धर्म मिच्छता ।।
नवेदेषु पुराणेषु धनुर्मासव्रतोपम
नियतस्त व्रतदृष्टवा धनुर्मासप्रपूजनं।
विवर्णवदनोभूत्वा तत्पापास्वर्जयेधमः ।।

इतिहास व पुराणो मे कई जगहो पर इस व्रत की महिमा के बारे मे बताया गया है, जो अद्वितीय है। इस व्रत कथा को बतानेवाले तथा सुननेवालें को देखकर यम विवर्ण वदन होकर उनके द्वारा किसी प्रकार के पाप कार्य करने पर भी अशक्त बनकर कुछ भी न कर सका।

इस व्रत को नियमानुसार एक महीना, पन्द्रह दिन पाच दिन, चार दिन या एकदिन यथाशक्ति करना चाहिए। अगर कोई भी कजूसी के कारण

श्रीवेंकटेश्वर स्वामीजी का मंदिर, मंगापुरम्.

दैनिक पूजा एवं दर्शन का कार्यक्रम

शनि, रवि, सोम, मगल तथा बुधवार

प्रात :	५–००	से	५–३०	सुप्रभात
,,	५–३०	,,	८–००	विश्वरूप सर्वदर्शन
,,	८–००	,,	८–३०	तोमाल सेवा
,,	८–३०	,,	८–४५	कोलुवु तथा पचागश्रवण
,,	८–४५	,,	९–३०	सहस्रनामार्चना
,,	९–३०	,,	१०–००	पहली घटी
,,	१०–००	दोपहर	१२–३०	सर्वदर्शन
दोपहर	१२–३०	,,	१–००	दूसरी अर्चना व दूसरी घंटी
	१–००	शाम	६–००	सर्वदर्शन
	६–००	,,	७–००	रात का कैंकर्य व रात की घटी
	७–००	,,	८–४५	सर्वदर्शन
	८–४५	,,	९–००	एकातसेवा

गुरुवार

प्रातः	५–००	से	५–३०	सुप्रभात
,,	५–३०	,,	८–००	विश्वरूप सर्वदर्शन
,,	८–००	,,	८–३०	पूलगि समर्पण (तोमाल सेवा)
,,	८–३०	,,	८–४५	कोलुवु तथा पचांग श्रवण
,,	८–४५	,,	९–३०	सहस्रनामार्चना
,,	९–३०	,,	१०–००	पहली घटी
,,	१०–००	दोपहर	१२–३०	सर्वदर्शन
दोपहर	१२–३०	से	१–००	दूसरी अर्चना व दूसरी घंटी
,,	१–००	,,	६–००	सर्वदर्शन
,,	६–००	,,	७–००	रात का कैंकर्य व रात की घंटी
,,	७–००	,,	८–४५	सर्वदर्शन
,,	८–४५	,,	९–००	एकांतसेवा

शुक्रवार

प्रातः	५–००	से	५–३०	सुप्रभात
,,	५–३०	,,	८–००	विश्वरूप सर्वदर्शन
,,	८–००	,,	९–००	सालिपु, नित्यकट्ल कैंकर्य व पहली घटी
,,	९–००	,,	१०–००	अभिषेक
,,	१०–००	,,	११–३०	समर्पण (तोमाल सेवा), दूसरी अर्चना व दूसरी घटी
,,	११–३०	से शाम	६–००	सर्वदर्शन
शाम	६–००	,,	७–००	रात का कैंकर्य व रात की घटी
,,	७–००	,,	८–४५	सर्वदर्शन
,,	८–४५	,,	९–००	एकांत सेवा

सूचना :—

अर्जित सेवाओं की दरें :—

१) शुक्रवार के साप्ताहिक अभिषेक रु. १००/– (दो व्यक्तियो को प्रवेश)
२) अर्चना रु ३/ ३) हारती रु. १/ ४) नारियल तोडना रु. ०–५०/
५) भगवान को प्रसाद (भोग) समर्पण भी किया जाता है।

पेष्कार, श्री वेंकटेश्वर स्वामीजी का मदिर, मगापुरम

न किये तो मूकरादि यानियो मे भूलोक मे कई प्रकार के कष्टो को झेलकर कुडे-कर्कट मे कीडे मकोडो के रूप मे जन्म लेते है।

नरकोत्तरण नास्तिद स्वनेवपुन. पुन·
अशक्तो व्याधितोवापि स्त्री वृद्ध शूद्र जो ऽथवा।

इस व्रत को स्त्री, वृद्ध, शूद्र जो नही मनाये, वे नरक को छोड नही सके। उन्हे कई दुःख भोगना पडता है।

अन्यैर्वा कारइत्वातु तैस्साक भोजनं चरेत्।
तस्यापापानि नइयन्ति वह्नि प्रक्षिप्त तूलवत्॥

अस्वस्थ लोग जो इस व्रत का आचरण न कर सके वे दूसरो से करवाकर उनके साथ भोजन करें तो अग्नि मे जलनेवाले कपास के समान उनके सभी पापो का नष्ट हो जायगा।

अगर कोई धनुर्मास पूजा के लिए याचना करके धन लाकर विष्णु पूजा व ब्राह्मण भोजन न करते है, वे स्वार्थ के कारण ब्रह्मघातक बनते है। इस व्रत का आचरण न करनेवाले धनवान दरिद्र बन जाते है। अगर कोई धन की याचना करके इस व्रत को करना है, वह चन्द्र के समान दिन-व-दिन-प्रवर्द्धमान हो जायगा।

अगर कोई इस धनु पूजा समय में घृत या तेल से दीपदान करता है, वे अखड दीप को विष्णुमूर्ति को अर्पित किये हुए, स्वस्थ शरीर के साथ प्रकाशमान रहते है। इस महीने मे श्री मन्नारायण स्वामीजी को दीपाराधन करने से ज्ञान कान बनेगे। इस व्रत के समापन के दिन पर प्रतिमादान मत्र को जपकर दक्षिण ताबूल समर्पण करके व्रत समाप्ति करना चाहिए। इस प्रकार एक महीना या आधा महीना इस व्रत का आचरण करें तो ऐश्वर्य प्राप्ति होगी।

श्लो ॥ धनुर्मासि मुनिश्रेष्ठ षोडशैरुपचारकैः
बृदावनेतुतुलसीं प्रत्यह पूजयेदयादि ॥
समुक्तस्सर्व पापेभ्यो विष्णुलोक व्रजेत्यु-
मान्॥

धनुर्मास में हर दिन अगर कोई तुलसी बृदावन में पूजा करें तो सभी पापो से विमुक्त होकर भगवान विष्णु मे लीन हो जायगा। इस मास में शास्त्रोक्तानुसर तुलसी पूजा अर्थात् भात मे घी मिलाकर नैवेद्य तथा तीन प्रदक्षिण करें तो,

(शेष पृष्ठ २३ पर)

शंकराचार्यकृत प्रश्नोत्तर मा

आमुष्मिक ऐहिक विभव चाहक मानव कौन ।
प्रश्णोत्तरमय सबक बिनुपढ रहना ौन ।।
क्य. उपादेय? गुरुवचन, क्या वर्जित ? दुष्कर्म ।
शिक्षक कौन है ? तत्व का वेत्ता वटुहित वर्म ।।
पण्डित का क्या फरज है ? भव सतति विच्छेद ।
मुक्ति पेड का ीज क्या ? कार्य सिद्धियुत वेद ।।

कौन लाभ है ? धरम है, ौन पूत शुचि चित्त ।
कौन सुधी ? सविवेक है, क्या विष गुरुकटु चित्त ।।
इस भव में क्या सार है ? भवचिन्तन बहु बार ।
क्या है मानव से लषित ? हितकर पैदावार ।।
सधसम ेही कौन ? रति, ौन चोर ? भव भोग ।
भववल्ली क्या लोभ है ेरिपु ? ना उद्योग ।।

किससे डर है ? मरण से, अधा कौन ? सकाम ।
शूर कौन है ? साधवी-दृगवीमुखी निष्काम ।।
क्या कर्णामृत है यहाँ ? सन्तो का उपदेश ।
मानमूल क्या ? याचना नाकसीसे स्वादेश ।।
अपरिमाण क्या ? ीचरित, क्या दुख अतृप्त रग ।
क्या चतुर है ? स्त्री विरत क्या लघुता ? भिख माँगा ।।

जीवन क्या ? निरवद्यता, क्या जडता ? नाभ्यास ।
सजग कौन ? साववेक है, ेना क्या ? अविकास ।
नलिनी जलसम तरल क्या ? यौवन धन औ आयु ।
शशिसम हितकर ौन है सज्जन शुभद चिरायु ।।
क्या है नरक ? अधीनता, क्या सुख है निस्सग ।
क्या ही सच है ? ीवहित, जीव प्रिय क्या साग ।।

क्या अनर्थफल ? दर्प है, क्या सुख ? मुनिसहवास ।
सब छुत्वहर पटु कौन है ? त्यागी त्यक्तविलास ।।
मरणसदृश क्या ? मूर्खता, अमूल्य क्या शुभदान ।
दर्दजनक आमृत्यु क्या ? दुष्कृति रहस्यवान ।।
प्रयत्न है किस केलिए ? देने औषध दान ।
उदासीनता हो कहाँ ? परधन में भगमान

चिन्तनीय क्या रात दिन ? स्त्री नहिं, भवनिस्सार ।
क्या इच्छित करणीय है ? दीनकृपा मुनिप्यार ।।
किसकी आत्मा मरण में सुधरी नहीं अतीव ?
दुष्ट विषादी भीत "औ" कृतध्न एव ।।

साधु कौन हे ? शीलयुत, नीच कौन ? दुश्शील ।
कौन जीतता जगत को ? सत्यवान शमशील ।।
किसका करते नमन सुर ? नर का कृपाविनीत ।
किस से डरना चाहिए भववन से कवि भीत ।।
किसका देता साथ गण ? मृदु विनीत का साथ ।
सुस्थिर रहना है कहाँ ? हितपथ में दिनरात ।।

अंधा कौन है ? कुकृतिरत, बहरा मानव कौन ?
हितसुनने इच्छुक नहीं, अप्रिय मौनी कौन ?
अनपेक्षण है, दान क्या ? क्या भूषण है ? शील ।
पाप निवारक, मित्र को ? क्या बल ? सच शील ।।
बिजलीसमान चपल क्या ? दुर्जनसगति नार ।
कलि में सुशील कौन है ? सज्जन शीलाधार ।।

लेका का रूपांतर

श्री टी. ई. एस. राघवन्
मद्रास-१७.

चिन्तामणिसम जगत में दुर्लभ क्या है? बोल।
ज्ञान-दान-धन-शूरता ये दुर्लभ अनमोल ।।
शोचनीय क्या? कृपणता, सुख में क्या स्तवनीय
उदारता है, नम्रनर, कौन सदा नमनीय?
वशपद्मरवि कौन है? वि नवयुन भी विनीत।
किसके वर में जगत है? प्रियवद अधर्म भीन ।।

क्या है बुध की मोहिका? सत्कविता चित-नार
किसको दुख छूता नहीं? गुरुवचपालनहार ।।
किसको कमला चाहती? उद्योगी को खूब।
किसको कमला छोडती? गुरुनिंदक को खूब ।।
निवास करना है कहाँ? काशी में सतसंग।
देश कौनसा त्याज्य है? तृषित भूपकामध ।।

किससे नर सतुष्ट है धन से औं नतदार।
शोचनीय है कौन इह? वित्तसहित अनुदार ।।
क्या लघुता का मूल है? नीचो के प्रति माँग।
कौन शूर है राम से? अविचल स्मरशर भाक ।।
चिन्तनीय क्या रात-दिन प्रभुपद नकि भवसार।
काण कौन नयनयुत भी? निरीशवादी नार ।।

पगु कौन है जगत मे? यात्री दुर्बल लोग।
तीर्थस्थल क्या है यहाँ। मनमल हर निश्शोक ।।
नर से क्या स्मरणीय है? हरि का ही है नाम।
बुध से क्या कथनीय है? असत्य दूषित काम ।।
क्या अर्जित है पुरुष से विद्या-धन-यश-नाम
क्या गुणनाशक, लोभ है कौन शत्रु है? काम ।।

सभा कौनसी वर्जिता? वृद्ध सचिवचिव से हीन।
कहाँ रहें अवहित मनुज? राज सेवा में लीन ।।
प्राणो मे भोरम्य क्या? सतो के सह वास
क्या क्या ही रक्षणीय है यश औं बुद्धिविलास
क्या कल्पलता जगत में? विद्या वर को देय।
वटतरुसम क्या जगत मे? सुविहित चीजें देय ।।

सब के कर में शस्त्र क्या? युक्ति. कौन माँ गाय।
सेना क्या है धैर्य ही, क्या विनाश, निरुपाय ।।
गरल कहाँ है? दुष्ट में, अशौच क्या? कर्ज
शरणागति क्या? विरति है, क्या भय? धन-कर्ज
क्या दुर्लभ? हरि भक्ति है, क्या पातक वध-काम।
देवप्रिय है कौन ही? अनुद्विग्न निष्काम ।।

किससे सुसिद्धि तपस से, बुद्धि कहाँ? भूदेव।
वह रखता मति कौनसी? वृद्ध जनों की सेवा ।।
बडा मरण से ख्यात को क्या है वह अपकीर्ति।
सुखी कौन? धनवान, धन क्या जो कारकनिजपूर्ति ।।
हर्षमूल क्या? पुण्य है शोकमूल क्या पाप।
किसको वैभव प्राप्त है जो शिवपूजक आप ।।

कौन वर्धिष्णु? सुविनयी सनष्ट कौन? सदर्प।
किसपर प्रत्यय नहि करें? जो झूठा सब पर्व ।।
असत्य कब पापकर नहि? धर्म रक्षण के काल।
क्या है जग में धरम हो? निजकुल गतकृतिजाल।
साधु सहारा कौन है? माना जाता देव।
कौन साधु है? निततुष्ट, पुण्यकर्म, क्या देव?।

कौन धन्य है? मनुजयति कौन मान्य? विद्वान।
कौन सेव्य? दानी मनुज, पूर्ण कौन सुतवान ।।
किससे मिलती मुक्ति तो? विष्णु भक्ति से एव।
कौन देव है सामने माता गुरुजन एव ।। ★

शरणागति रहस्य

श्री राजेन्द्राचारी, कैथी

'सितरू चिरविका सितानननाळज-
मति सुलभ सुराज जील जीत्म् ।
सित जल रूह चारू नेव शौभ-
रघुपति मीशगुरो गुरवे प्रपद्ये ॥''

अर्थात् जिनका मुख कमल मनोहर मुसकान से खिला रहता है, जो भक्तो के लिए अति सुलभ है जिनके शरीर की कान्ती इन्द्र जील मणि के समान नील वरण है, तथा जिनके मनोहर नेत्र श्वेत कमल की शोभा वाले है, जो भगवान भाष्यकार जी के पिता, ब्रह्माजी के पिता, शिवजी के पिता जो श्रीरघुनाथ जी है, इनकी मै शरण लेता हूँ ।

भगवान की शरणागतवत्सलता प्रसिद्ध है । भगवान की घोषणा है कि—

सकृदेव प्रपन्नाय तवास्म ति च याचते।
अभयं सर्वं भूतेभ्यो ददाम्यतद् ब्रत मम ॥

श्रियः पति भगवान कहते है कि जो एकबार भी मेरी शरण में आकर कह देता है कि हे प्रभु! मै आपका हूँ । ' उस जीव को मै सदा के लिए अभय दान दे देता हूँ । जैसे विभीषणने अपने ज्येष्ठ भ्राता रावण को सिखाने लगे कि हे भाई आप श्रिय पति भगवान के शरण मे जाओ, जब यह बात रावण ने सुनी तो विभीषण को लात मारी । जब विभीषण चरण प्रहार पाकर के कहते है कि हे रावण! अब मै भगवान की शरण में जा रहा हूँ ।

विभीषण जी भगवान की शरण मे जाते समय यह कहते है कि आज मै उसी 'कमलनयन' भगवान को इस नेत्र से दर्शन करूँगा, जिस चरणो पादुका मे भरतजी ने मन लगाया है । जब विभीषण शिविर के द्वार पर पहुँचते है तो विभीषण को वानर लोग घेर लेते है और यह समाचार श्रियःपति भगवान के यहाँ पहुँचाते है। फिर इसके बाद अपना सम्मति देते हुए कहते है कि हे प्रभु! राक्षसो की माया जानी नहीं जाती है । पता नहीं कि ये हम लोगो के यहाँ क्यो आया है । यह रावण का भेजा हुआ दुष्ट हमारा भेद तो जानने नहीं आया है । अत. इसको कैद करना चाहिये । तब भगवान कहते है कि हे मित्र यह मेरा प्रण है कि जो जीव एकबार भी मेरी शरण मे आ जाता है, उसके भय को हर लेता हूँ।

सरनागत कहूँ जे तजहि, नित अनहित
अनुमानि ।
ते नर पावर पापमय, तिनहि विलोकत
हानि ॥

अर्थात् जो अनहित विचारकर शरणागत को त्याग देते है, वह मनुष्य पापी, नीच है, उसको देखने में पाप लगता है । इसलिए भगवान ने साफ कह दिया है कि—

जो सभीत आवा शरनाई ।
रखिहउँ ताहि प्रान की नाई ॥

अतएव हे सुग्रीव देखिये विभीषण का कितना दु.ख हुआ कि एक तो यह आने में कष्ट उठाया अतः भगवान ने विभीषण को शरण में रखकर प्राण के समान रक्षा की ।

भगवान सुग्रीवजी से कहते है कि हे सुग्रीव मुझे सकट में पडे हुए भक्तो के दु.ख को देखा नहीं जाता है। कोई मुझको कितना भी अटकाव परन्तु मुझसे रुका नहीं जाता है, यह मेरा स्वभाव ही है । मै क्या करूँ जिस समय दुःख मे पडा हुआ दीन मेरा स्मरण मात्र कर लेता है । तो मै वहाँ जाता हूँ और उसको उसी समय दुःख से छुडाना हूँ ।

जैसे सकट मे पडे गजेन्द्र ने जिस समय उसकी तिल मात्र सूड बाहर था । तब उसने भगवान का स्मरण एवं ध्यान किया । यहाँ गजेन्द्र को बोलने का समय नहीं था । बस भगवान आतुर होकर जल्दी से गरुड को भी छोडकर गजेन्द्र की रक्षा की । अत जीवो को एक मात्र भगवान के ही सब प्रकार से शरण में जाना चाहिए ।

(अनन्त सन्देश की सौजन्य से)

ब्रह्मोत्सव के अवसर पर पुष्पमालाकृत भगवान श्री बालाजी

प्रेम लक्षणा भक्ति-रूपासक्ति

आध्यात्मिक दृष्टि से प्रेम लक्षणा भक्ति का जैसा सूक्ष्म विवेचन पूर्व - मध्यकाल अथवा मध्य काल में हुआ, वैसा प्राचीन काल में नहीं हो पाया। उपनिषद्काल में ज्ञान का महत्त्व अधिक था, अतः उस समय के ऋषि - मुनियो ने ज्ञान का गभीर विवेचन किया था। ज्ञान के साथ ही साथ कर्म और योग की भी विस्तृत व्याख्या की गई, परन्तु भक्ति का महत्त्व समझा गया।

श्री चैतन्य महाप्रभु के विद्वान शिष्य श्री रूप गोस्वामी ने भक्ति को रस मानकर अपने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ ''भक्ति रसामृत सिन्धु' में भक्ति रस का सागोपाग विवेचन किया है। उन्होने भगवद् विषयक रति अर्थात् भगवान से प्रेम को भक्ति रस का स्थाई भाव माना है।

भगवद् विषयक रति अर्थात भगवान का प्रेम भी भक्तो के स्वभाव के अनुसार क्रम से शान्त, दास्य, सख्य, वात्सल्य और मधुर इस भाँति पाँच प्रकार का माना गया है। ज्ञान-क्षेत्रमें शान्ता रति सर्व श्रेष्ठ और माधुर्य अर्थात कांता रति सब से निम्न कोटि की मानी गई है। किन्तु भक्ति - क्षेत्र में इसके विपरीत मान्यता स्थापित हुई। भक्तितत्त्व के पूर्ण विकास के परिणाम स्वरूप शान्ता रति सब से निम्नकोटि की समझी गई है और काता रति सर्वश्रेष्ठ मानी गई है। कान्ता रति लौकिक व्यवहार का श्रृंगाररस है जिसका स्थाईभाव प्रेम है। यही कान्ता रति भक्ति पक्ष में मधुर रस है और इसका स्थाई भाव भी प्रेम है, किन्तु लौकिक श्रृगार का प्रेम, विषय वासना पूर्ण 'काम' है, जबकि भक्ति पक्ष का अलौकिक प्रेम सर्व कामना रहित 'शुद्ध प्रेम' है।

श्री आनन्दमोहन, एम ए.,
हैदराबाद

नारद भक्ति - सूत्र की छह आसक्तियो का समावेश भगवान की नवधा भक्ति में किया गया है। भक्ति - सूत्र की शेष पाँच आसक्तियाँ रूपासक्ति, वात्सल्यासक्ति, कांतासक्ति, तन्मयतासक्ति और परम विरहासक्ति दसवीं प्रेम लक्षणा भक्ति के अन्तर्गत मानी जा सकती है।

रूपासक्ति :

इन आसक्तियो में से पहले रूपासक्ति' का विवेचन किया जाएगा।

भगवान की अनन्त रूप राशि में अपना मन तल्लीन कर उनकी भक्ति करना 'रूपासक्ति' है। भक्तो के भगवान के रूप का वर्णन अपनी अपनी रुचि के अनुकूल किया है।

नामदेव

अ) न वर्णवे वाचे जन्म मरण दु:ख।
दावी आतामुख पांडुरंगा।

हे पांडुरंग! मै अपने जन्म - मरण दु ख का वर्णन न करूँगा, अपने श्रीमुख का दर्शन दीजिए। आपके घुँघराले केश, मस्तक पर तिलक और

(शेष पृष्ठ २७ पर)

भगवान बालाजी का सहस्र कलशाभिषेक

आगम शास्त्रों के अनुसार निर्मल जल से अभिषेक करना अत्यत पवित्र आचार है।

सहस्र कलशाभिषेक भक्तों द्वारा लौकिक तथा पारलौकिक सुखों के प्राप्त करने के उद्देश्य से मनायेजानेवाली विशेष अर्जित सेवा है।

बालाजी के गर्भगृह के सामने नीचे जमीन पर धान (Paddy) को शय्या के आकार में बिछाया जायगा। चदन इत्यादि सुगंधित द्रव्यों के परिमल तीर्थ से १००८ रजत कलशो को भरकर उस के ऊपर रखते हैं। वेदमंत्रों के पठन तथा होम से उन कलशों को पवित्र किया जाता है। उस के बाद आगमानुसार उस पवित्र तीर्थ से भोग श्रीनिवास, मलयप्पस्वामी तथा उनकी देवियों और विश्वक्सेन का अभिषेक किया जाता है। बगारु वाकिलि (स्वर्ण द्वार) के पास होम तथा अभिषेक सपन्न होता है। श्री श्रीनिवासमूर्ति गर्भगृह से बाहर केवल इस एक ही अवसर पर विराजते हैं इस समय भी भोग श्रीनिवासमूर्ति को मूलमूर्ति से रेशम की डोरी द्वारा सम्बन्ध रखा जाता है।

सहस्र कलशाभिषेक केवल बुधवार को सपन्न होनेवाली अर्जित सेवा है जिस की दर रु २,५०० है। जो गृहस्थ इस सेवा को मनायेगा वह अपने साथ परिवार के १० लोगों को ले जा सकता है। सेवा के अत में वस्त्र पुरस्कार के साथ गृहस्थ को वडा, अप्पम, दोसै इत्यादि प्रसाद भी दिये जाते हैं।

देवस्थान के धार्मिक साहित्य प्रचार कार्यक्रम का विवरण देते हुए देवादाय शाखा के कमीशनर श्री चन्द्रमौली रेड्डीजी। मंच पर सर्वश्री प्रसाद, उषश्री, रमेशन बैठे हुए हैं।

भागवत वचन ग्रंथ (तेलुगु) का उद्घाटन

वार्षिक ब्रह्मोत्सव के अवसर पर जन सामान्य तक धार्मिक साहित्य के प्रचार करने के लिए प्रमुख तेलुगु रचयिता 'उषश्री' के भागवत वचन ग्रंथ का उद्घाटन किया गया।

भागवत के रचयिता श्री उषश्री को देवस्थान की ओर से सन्मान करते हुए डा. रमेशन, तथा श्री प्रसाद जी।

(पृष्ठ १५ का शेष)

तिरछी भृकुटी मुख की शोभा बढा रही है। आपके कमलाकार नेत्र, सुन्दर नासिका, कान के सुवर्ण कुडल बडे आकर्षक है। आपके आरक्त अधर और चन्द्रिका मे भी अधिक शुभ्र दॉत बडे मन मोहक हैं।

(नामदेव गाथा–त्र्यबक हरि हावटे अभग १२)

आ) 'गेलिग्रा वृंदावना तेथें देखिलाकान्हा'

एक ग्वालिन वृन्दावन गई थी। वहाँ उसने श्रीकृष्ण को अपने सखाओ के साथ खडा हुआ देखा। उन्हे देखकर उसका मन उनके लावण्य रूप पर मोहित हो गया। वह कहती है

'ऐ सखी! मै क्या कहूँ मुझे तो हरि नाम अत्यन्त प्रिय प्रतीत होता है। कृष्ण को देखकर मेरा मन चचल हो गया है। उनके सुन्दर मुख और कुडलो ने मेरे मन को चुरा लिया है। उनके मुख-चन्द्र पर मुग्ध होकर चकोर ने चन्द्रमा को त्याग दिया। गले की वैजयन्तीमाला और कौस्तुभ मणि की शोभा ऐसी है मानो ध्रुव-मडल को त्याग कर नक्षत्र ही हृदय पर प्रकाश कर रहे है। कधनी की प्रभा ऐसी है मानो मेघो को छोडकर विद्युतकटि पर चमक रही है। लक्ष्मी जी अपना विष्णु लोक त्याग कर कृष्ण से वार्तालाप करने के लिए आगई।

कृष्ण के चरणो की पंजनी ऐसा मधुर शब्ध करती है कि उसे सुनकर पक्षी उडना भूल जाते हैं और गाये रभाने लगती है। आश्चर्य तो यह है कि स्वर्ग के देवता इस रूप पर मोहित हो गए तथा ब्रह्मादिक देव उनके उच्छिष्ट भोजन सेवन करने के लिए मछलियाँ बन गए।

(नामदेव गाथा त्र्यबक हरि आवटे अभग २४६)

सूरदास :

रूप-राशि कृष्ण के शरीर को देखकर सब उपमाएँ लज्जित है। इस लज्जा के मारे कोई जल में, कोई बन मे और कोई गगन में जा छिपीं। कृष्ण की मुख-छवि देखकर चन्द्रमा और दाँतो के सौन्दर्य को देखकर बिजली गगन में जा छिपीं। नेत्रो से डर कर मछली तथा हाथ और चरणो से डर कर कमल के जल में बसेरा लिया है। भुजाओ को देखकर सर्पराज लज्जित हो बिलो में दौडकर घुस गए। कटि को देखकर सिंह डर कर वन मे छिप गए। भगवान के अंग प्रत्यंग की जब कवि उपमा देते हैं तो वे उन्हे गाली देती है क्योकि वे समझती है कि उनका नाम लेना उन्हे लज्जित करना है।

(सूरसागर सार डा० धीरेन्द्रवर्मा – पद १५१)

नामदेव और सूरदास ने रूप-राशि कृष्ण का सौन्दर्य वर्णन करने मे बडी पटुता से काम लिया है। जब नामदेव की उपमाएँ निसर्ग का त्याग कर कृष्ण के अग-प्रत्यगो पर आकर चिपक जाती है तो सूरदास की उपमाएँ भयभीत और लज्जित होकर निसर्ग – वन गगन और जल— मे छिप जाती है। जब नामदेव मुख सौन्दर्य के वर्णन करने के लिए 'साडुनी अमृत घनी लुब्धती चकोरे' का उपयोग करते है।

तो सूरदास

"मुख निरखत सहीन गयो अबर को" का उपयोग करते हैं।

'नामदेव कटि-सूत्र की शोभा को
साडुनी मेघराजु करि सूत्री तपे विनू'

से व्यक्त करते है

तो सूरदास करि की शोभा की व्यजना इस प्रकार करते है

'करिनिरखत केहरि उर मान्यो
बन बन रहे दुरई ॥'

तुकाराम

ऋ राजस सुकुमार मदना चा पुतला'

कृष्ण बडे सुन्दर है मानो कामदेव की ही मूर्ति है। उनकी कान्ति मे सूर्य और चन्द्र का प्रकाश निष्प्रभ हो जाता है। उनके शरीर पर चन्दन का लेप है और मस्तक पर कस्तूरी का तिलक। वे कठ मे वैजयन्तीमाला पहने हुए है। मुकुट और कुंडल से श्रीमुख की शोभा बढ रही है। वे अपने मेघश्याम शरीर पर पीताम्बर पहने हुए हैं। उनकी इस रूप-राशि से सुख की वर्षा हो रही है।

(तुकाराम गाथा केसकर अभग ४३३)

आ) 'सुन्दर तें ध्यान उभें विटेवरी'

पडरीनाथ कमर पर दोनो हाथ रखे हुए ईटो पर खडे है। गले में तुलसी का हार है, पीताम्बर पहने है। कृष्ण के इस रूप का ध्यान मुझे निरतर प्रीत मालूम होता है। उनके कानो में मकराकृत कुंडल जगमगा रहे है और कठ में कौस्तुभ मणि विद्यमान है। तुकाराम इस ध्यान को सुन्दर समझते है और पंडरीनाथ के श्रीमुख को प्रेम से देखने के लिए सदा उत्सुक रहते है तथा इसी को अपना सब कुछ समझते है।

(तुकाराम गाथा केसकर—अभग ४३३)

तिरुमल यात्रियों को सुविधाएँ

* * * * *

* सभी तरह के लोगों को रहने के लिए मुफ्त में दी जानेवाली धर्मशालाए या उचित दरों पर मिलनेवाले काटेजस का प्रबध।
* श्री बालाजी के दर्शन के लिए जानेवाले यात्रियों के क्यू षेड्स में हवा तथा प्रकाशमान सुविशाल कमरों का प्रबध।
* क्यू षेड्स में ही काफी बोर्ड के द्वारा नाश्ता का प्रबध।
* उचित दरों पर दही-भात के पोटलियों का विक्रय।
* यात्रियों को विना बाहर आये ही, क्यू षेड्स के पास ही सण्डास का प्रबध।
* आंध्र प्रदेश सरकार के डेयरी डवलपमेंट कार्पोरेशन के द्वारा शुद्ध दूध आदि का विक्रय।
* यात्रियों को पढने के लिए देवस्थान से प्रकाशित ग्रंथ तथा भगवान बालाजी व पद्मावती देवी के चित्रपटों का विक्रय।
* यात्रियों को मनोरंजन तथा विश्राम के वास्ते टेलिविजन का प्रदर्शन व सगीत का प्रसार।
* क्यू लाईन में तथा तिरुमल को पैदल जाने के रास्ते में ७ वी मील पर चिकित्सा की सुविधा।
* सामान व चप्पल को रखने के लिए विशेष सुविधाएँ।
* तिरुमल के सेन्ट्रल रिसेप्षन आफिस से अन्य प्रातों को आटो रिक्षा (Auto Rickshaw) की सुविधा।
* तिरुमल को पैदल जानेवाले यात्रियों के सामान को तिरुमल तक पहुँचाने का प्रबध।
* धोखेबाज या दलालों से रक्षा करने के लिए पेष्कार के ओहदे पर अधिकारी की मुखद्वार पर नियुक्ति।
* क्यू षेड्स के यात्रियों की शिकायतों की जाँच - पडताल करने को तथा आवश्यक सुविधाओं को इन्तजाम करने के लिए पेष्कार के ओहदे पर अधिकारी तथा कर्मचारियो की नियुक्ति।
* देवस्थान से दी जानेवाली ऐसी अन्य बहुत सुविधाएँ है।

सूचना :— तिरुमल मे दि २–४–७९ से डाकघर रात को ८–३० बजे तक काम करती है। इसके अलावा मुख्य डाकघर रात के १०–३० से २–०० बजे तक काम करती है। अगर चाहें तो श्री बालाजी के भक्त अन्नमाचार्य के डाक-मुहर अपने कार्ड या कवरों पर छपवा सकते हैं।

(पृष्ठ १२ का शेष)

ही रहेगा। यहाँ कहा गया कि यह जगत् सृष्टि के पहिले सत् शब्द से कही जाने वाली वस्तु के रूप में था। तो यह सिद्ध हुआ कि वही सत् कही जाने वाली वस्तु इस जगत् का उपादान कारण है। वह उपादान कारण एक ही था। यह बात एकमेव शब्द से कही गई। जगत् का उपादान कारण सद्वस्तु है। इतना सिद्ध हो जाने पर निमित्त कारण का प्रश्न उठता है। एक घडा है। मिट्टी उस घड़े का उपादान कारण है क्योंकि मिट्टी से घड़ा बनता है। कुम्हार उस घड़े का निमित्त कारण है। कुम्हार उसे बनाता है। दण्डे से वह चाक घुमाकर घडा बनाता है। इस वास्ते दण्डा और चाक सहकारी कारण हुए। इसी तौर पर सोनेके आभूषण को लें। जगत् का उत्पादान कारण मालुम हो गया वह है सत् शब्द वाच्य चीज। अच्छा तो अब जगत् का निमित्त कारण क्या है यह नहीं मालुम हो सका। माना कि जगत् का उपादान कारण सद्वस्तु है और वह एक ही है, अस्तु निमित्त कारण तो कोई दूसरा होगा न। इसका जवाब इसी मत्र में अद्वितीयम् पद से मिल जाता है। अर्थात् निमित्त कारण दूसरा नहींवा।ही सत् शब्द वाच्य वस्तु जगत् का निमित्त कारण भी है। इस जगत् का उपादान कारण निमित्त कारण और सहकारी कारण सब कुछ वही सद् वस्तु है क्योकि जगत् की उत्पत्ति के पहिले जब एक सद्वस्तु को छोड़कर दूसरा कोई था ही नहीं तो निमित्त कारण व सहकारी कारण अलग कहाँ से आवेगा। अभी तक जिस वाक्य की व्याख्या की वह वचन छान्दोग्योपनिषद् का है। इस से यह बात मालुम हुई कि जगत् के कारण की जो चीज है। उसका नाम सत् है परन्तु वह सत् वस्तु कैसा है छोटा है या बड़ा है। यह बात इस वचन से नहीं मालुम हुई। सत् शब्द से यही मालुम हो सका कि जगत् कारण वस्तु असत् नहीं है। बस यह जानने की इच्छा फिर भी उत्पन्न होती है कि वह सत् नाम से कहे जाने वाली वस्तु छोटी है या बडो। तब वृहदारण्यक उपनिषद् का यह वचन कि "ब्रह्म वा इदमेक एवाग्र आसीत्" हमारे काम में आता है। वाक्य में और तो सब वे ही पद हैं जो उस छांदोग्य उपनिषद् के वचन में थे, जिसका विवेचन हमने अब तक आपके सामने किया। केवल एक पद का हेर फेर है। वह पद है "ब्रह्म"। एक पद और है इस वृहदारण्यक उपनिषद् के वचन में "वा" शब्द पठित है। छांदोग्य उपनिषद् के वचन में एव शब्द था। इस वास्ते यहाँ के वा शब्द का वही अर्थ होगा जो पहिले के वचन में एव का अर्थ है। अच्छा तो इस समस्त बचन का यह अर्थ निकला "यह जगत् सृष्टि के पहिले ब्रह्म ही था। अर्थात् यह जगत् ब्रह्म के रूप में था। ब्रह्म उसको कहते है जो सब से बडा हो। इससे यह बात प्रकट हुई कि जगत् का कारण एक बड़ी चीज है छोटी नहीं है।

छांदोग्य उपनिषद् कहता है। कि जगत्का कारण सद्वस्तु है। वृहदारण्यक उपनिषद् कहता है कि जगत् का कारण ब्रह्म है। यहाँ यह विचारने की बात है कि जगत् कारणभूत सत् और ब्रह्म अलग अलग चीज हैं या एक हैं। जगत् का कारण बताते हुए सत् वस्तु और ब्रह्म अलग मानना ठीक नहीं। इन दोनों को भिन्न भिन्न उचित नहीं। ऐसा यदि हम मानने लगें दोनो उपनिषदो में से एक को झूठा मानना पड़ेगा। दोनो में से एक को गलत ठहराना होगा क्योंकि छान्दोग्य उपनिषद् कहता है कि सृष्टि होने से पहिले सद्वस्तु को छोड़कर दूसरा कोई था ही नहीं। और वृहदारण्यक कहता है कि ब्रह्म को छोड़कर सृष्टि के पूर्व कोई भी दूसरी चीज नहीं थी। अब ये दोनो एकदम कैसे प्रामाणिक सिद्ध हों। दोनों ही वेद हैं। अतएव किसको अप्रमाणिक कहा जाय। कोई भी अप्रमाण नहीं माना जा सकता। सत्य है। किसीको भी अप्रमाण नहीं मानना चाहिये, परन्तु यह कैसे हो। एकको यदि प्रमाण मानते हैं तो दूसरा अपने आप अप्रमाण ठहर जावेगा।

हाँ यदि ऐसा हो कि दोनो एक ही वस्तु को जगत् का कारण और सृष्टि पूर्व रहने वाला बताते हो तब दोनो की प्रमाणता कायम रह सकेगी। वास्तव में ऐसा ही हैभी। छादोग्यमें जिसको सत् कहा है उसी को वृहदारण्यक में ब्रह्म कहा है। शब्द मात्र का भेद है। वस्तुका भेद नहीं है। अर्थमें भेद जरूर है पर उसके बिना काम भी नहीं चलता। उसकी जरूरत भी है छादोग्य ने जगत्कारण को सत् कहा। वह सत् छोटा है कि बड़ा यह सदेह था। वह इस ब्रह्म शब्द से दूर हो गया। जगत् कारण वस्तु सत् भी है और ब्रह्म भी है। यही बात इन दोनो वचनो से सिद्ध हुई।

इतना हो जाने पर भी यह शङ्का फिर भी आकर घेर लेती है कि जगत्कारण वस्तु जानदार है या बेजानदार। मिट्टी पत्थर जैसा बेजान वस्तु है या पशु मनुष्य जैसा जानदार है। माना कि वह ब्रह्म यानी बड़ा है। तो यह कैसे मालुम हो कि यह बडप्पन उस जगत्-कारण के मोटापे के कारण है या किसी दूसरे कारण है। "सत्" और ब्रह्म कहने से जड होने या चेतन होने का निश्चय नहीं हो सकता। क्योंकि जड भी सत् हो सकता है और चेतन भी। इसी तौर पर बृहत्व का भी निश्चय नहीं हो सकता। तब ऐतरेयोपनिषद् का यह वचन "आत्मा वा इदमेक एवाग्र आसीत्" काम में आता है। इसमें अन्य सब शब्द वृहदारण्यक वाक्य के समान होने पर भी ब्रह्म शब्द की जगत् आत्मा शब्द पडा है। इस वचन में कहा गया है कि यह जगत् सृष्टि के पूर्व आत्मा था। अर्थात् आत्मा के रूप में था। इस वचनका छादोग्य और वृहदारण्यक वाक्यो के साथ कहीं विरोध न पड़े,इसलिये इस वचन के आत्म शब्द से कोई ऐसा अर्थ लेना चाहिये जिससे कोई भी वाक्य अप्रमाण न हो। अन्यथा या तो यह वाक्य अप्रमाण सिद्ध होगा या वो दोनो वाक्य, अतएव यह मानना पड़ेगा कि जिस चीज को उन दोनो वाक्यों ने जगत्-कारण बताया है उसी को इस वाक्य ने एक दूसरे शब्द से बता दिया है। इस वचन में जो आत्म शब्द आया उससे यह संशय साफ हो जाता है जो उन दोनो शब्दो से साफ न हो सका। आत्म शब्द चेतनमें रूढ है। और योग शक्ति से व्यापक चीज का वाचक है। इस वास्ते यह आत्म शब्द जगत् कारण वस्तु को चेतन और व्यापक बताता हुआ उन दोनों संशयो को दूर फैंकरता है। छादोग्य में जो जगत्कारण सत् वस्तु कहा गया है। वह चेतन है जड़ नहीं। और वृहदारण्यक उपनिषद् मे जगत्कारण वस्तु कोजो बडा बतलाया है वह बड़प्पन बड़े आकारकी वजहसे नहीं बल्कि सर्व व्यापक होने की हैसीयत है। यह बात इस ऐतरेय वचन से सिद्ध हो गई।

हमने जान लिया कि छादोग्य का सत् वृहदारण्यक का ब्रह्म और ऐतरेय का आत्मा एक ही चीज है। अलग अलग चीज नहीं। यह भी हमने जानलिया कि जगत् कारण वस्तु सत् है असत् नहीं। बड़ा है छोटा नहीं। चेतन है जड़ नहीं। इतना जान लेने पर एक संशय फिर भी बाकी रहता है वह यह है कि जो जगत् कारण सत्वृहत् आत्मा है। वह है कौन आत्मा अनेक है। उनमें कौनसा आत्मा जगत्कारण है। जीवात्मा है कि परमात्मा है तो वह ब्रह्मादि देवताओं में से है या उनसे अलग कोई दूसरा है। इसका उत्तर महोप-निषद् में मिल जाता है। महोपनिषद् में कहा है 'एकोह वै नारायण आसीन्न ब्रह्मानेशानो नेमेक्षावापृथवी न नक्षत्राणि नापो नाग्निर्न सोमो न सूर्यः'।

इस वचन में कहा है कि सृष्टि के पूर्व एक नारायण ही थे। ब्रह्माजी, महादेवजी, स्वर्ग, पृथ्वी, तारे, जल, अग्नि, सूर्य आदि कुछ भी नहीं था। अब हमें यह बात विचारनी है कि सृष्टि के पहले जगत्कारण के रूप में कही गई सत् ब्रह्म, आत्म वस्तु छादोग्य वृहदारण्यक और ऐतरेय वचन से सिद्ध होती है। महो-पनिषद् कहता है कि सृष्टि के पहले नारायण को छोड दूसरा कोई नहीं था। यदि छान्दोग्य वृहदारण्यक और ऐतरेय उपनिषद् में कहे गए सत् ब्रह्म आत्म शब्द से कही जाने वाली जगत्-कारण वस्तु नारायण से भिन्न है तो महो-पनिषद् के साथ उन उपनिषदोंका विरोध होगा। तब एक ओर एक पक्ष को अप्रमाण कहना होगा। और यदि महोपनिषद् मे कहे गए नारायण ही सत् ब्रह्म आत्मा है तो एक मत हो जाने से सभी का प्रामाण्य रह सकता है। एक उपनिषिद् को अप्रमाण सिद्ध करने वाले पक्ष की अपेक्षा जिस पक्ष में सभी प्रमाण बना रहे वही पक्ष योग्य होगा। तब चारो उपनिषदो को विचारने पर सत् शब्द वाच्य महान् व्यापक आत्मा श्रीमन्नारायण ही जगत् कारण है — यह सिद्ध होगा। हमारे भीतर यह संशय जो था कि जगत्कारण आत्मा — अर्थात् जीवात्मा है या परमात्मा। जब यह

श्री वेङ्कटेश्वरस्वामीजी का मंदिर, तिरुमल.

अर्जित सेवाओं की दरें

विशेष दर्शन रु. 25—00

सूचना — एक टिकट के द्वारा एक ही दर्शनार्थी भगवान के दर्शन प्राप्त कर सकेगा।

I सेवाएं :—

१ आमत्रणात्सव	रु 200	६ जाफरा बरतन (Vessel)	रु 100
२ पूरा अभिषेक	450	७ सहस्रकलशाभिषेक	2500
३. कर्पूर बरतन (Vessel)	250	८ अभिषेक कोइल आलवार	1745
४ पुनुगु तेल का बरतन (Vessel)	100	९ तिरुप्पाबडा	5000
५ कस्तूरि बरतन (Vessel)	100	१०. पवित्रोत्सव	.. 1500

सूचना – सेवासख्या१ — इस सेवा में दो व्यक्ति ही दशन प्राप्त कर सकेंगे। जिस दिन प्रात काल तोमाल सेवा और अर्चना की है केवल उसी दिन रात में एकान्तसेवा के लिए भी भक्त दर्शनार्थ जा सकते हैं।

सेवा क्रमसख्या २-६ — केवल शुक्रवार को मनायी जाती है। इन सेवाओ के लिए प्रवेश इस प्रकार होगा —

क्रमसख्या २ – बर्तन के साथ केवल २ व्यक्ति।
३ – बर्तन के साथ केवल २ व्यक्ति।
४ – ६ – बर्तन के साथ केवल एक व्यक्ति।

सेवा क्रमसख्या ८ – १० – प्रत्येक सेवा सम्पूर्ण दिन का उत्सव है। सेवा करानेवाले भक्त को प्रसाद दिया जायगा, जिस में बडा, लड्डू, अप्पम दोसा इत्यादि होंगे। इस के अतिरिक्त सेवा न. ८ के लिए वस्त्र भी भेंट के रूप में दिया जायगा। सहस्र कलशाभिषेक, तिरुप्पाबडा तथा पवित्रोत्सव सेवाओ में हर एक सेवा को १० व्यक्ति जा सकते है।

साधारण सूचना –रिवाजो के अनुसार दातम (Datham) और आरती के लिये एक रुपये का अतिरिक्त शुल्क अदा करना पडेगा।

II उत्सव .—

१ वसन्तोत्सव	रु 2500	४. प्लवोत्सव	रु 1500
२. कल्याणोत्सव	1000	५. ऊंजल सेवा	1000
३ ब्रह्मोत्सव	750		

सूचना :– १. वसन्तोत्सव :– जो भक्त वसन्तोत्सव मनाना चाहते हैं उनकी सुविधा के अनुसार और मदिर की सुविधा के अनुसार यह उत्सव तीन दिन अथवा उससे कम दिनो में मनाया जायगा और उन्हे वस्त्र पुरस्कार मिलेगा ।

४. ब्रह्मोत्सव :– इस उत्सव को जो यात्री मनाना चाहते है अपने साथ ६ साथियो को ला सकते है, तथा तोमालसेवा, अर्चना और रात की एकान्तसेवा में भाग ले सकते है। यह उत्सव तीन दिन तक अथवा उससे कम दिनो में यात्री की सुविधा के अनुसार और मदिर की सुविधा के अनुसार मनाया जायगा । उत्सव के दिनो में उस के मनानेवाले को पोगल और दोसा इत्यादि प्रसाद भी दिये जायेंगें । उत्सव के अन्त में वस्त्र पुरस्कार दिया जायगा ।

३ कल्याणोत्सव या श्रीस्वामीजी के विवाहोत्सव के अन्त में वस्त्र पुरस्कार और लड्डू, बडा, पापड, दोसा आदि नियमानुसार प्रसाद के साथ दिये जायेंगे ।

III वाहन सेवाएं :–

१ वाहन सेवा सर्वभूपाल वज्रकवच सहित ७२+१ (आरती) रु. 73

२. वज्रकवचसहित वाहनसेवा स्वर्ण गरुडवाहन, कल्पवृक्ष, बडा शेषवाहन, सर्वभूपाल, सूर्यप्रभा, प्रत्येक ६२+१ (आरती) 63

३ चांदी गरुडवाहन, चन्द्रप्रभा, गज (हाथी) वाहन, अश्ववाहन, सिंहवाहन, हंसवाहन, प्रत्येक ३२+१ (आरती) 33

सूचना :– वाहनसेवा मनानेवाले गृहस्थ को प्रसाद में एक बडा दिया जायगा ।

साधारण सूचना :– न ३ और ४ के लिये दातम और आरती के लिये समय और रिवाजानुसार एक एक रुपये का अतिरिक्त शुल्क अदा करना होगा ।

IV भगवान को प्रसाद (भोग) समर्पण (१/४ सोला) :–

१ दहीभात	रु	40	४ शक्करपोगलि	रु	65	७ शक्करभात	रु.	85
२. बघार भात		50	५ केसरीभात	..	90	८ शीरा	...	155
३ पोगलि(घी और मिर्चभात)		55	६. पायसम (खीर)	...	85			

सूचना :—भोग के बाद प्रसाद भक्त को दिये जायेंगे । भोग के बाद अपने प्रसादो को भक्त लोग आकर अपने बर्तन में स्वीकार करेंगें ।

V. पक्वान्नों की भेंट :—

१. लड्डू	रु.	450	४. दोसै	रु.	100	७ सुखी	रु	200
२ बडा	...	250	५ पापड	..	230	८. जिलेबी	...	450
३ पोली	.	225	६ तेनतोल	...	200			

सूचना —जो गृहस्थ उपर्युक्त पक्वानो की भेंट देते हैं उन्हे भोग के बाद ३० पनियारम दिये जायेंगे। प्रसाद-पन्यारम को गृहस्थ स्वय आकर मन्दिर से ले जा सकते है । भोग के बाद मन्दिर की दूसरी घटी बजते ही प्रसाद पन्यारम दिया जायगा ।

VI. नित्य सेवाएं :—

१. नित्य कर्पूर हारती रु. 21   २. नित्य नवनीत आरती रु. 42   ३. नित्य अर्चना रु. 42

सूचना :—नित्य सेवाओ के लिये प्रथम वर्ष में अतिरिक्त रूप से देय शुल्क वर्ष के पहले हर एक सेवा के लिए अग्रिम के रूप में देना पडेगा । जो भक्त इन नित्य सेवाओ को मनाते है उनको भगवान के दर्शन केलिए प्रवेश नही मिलेगा । भक्तों की अनुपस्थिति मे ही उनके नाम पर इन सेवाओ को सपन्न किया जायगा ।

बात मालुम हो गई कि जगत्कारण नारायण ही है। तो यह भी सिद्ध हो गया। कि जगत्कारण जीव नहीं है परमात्मा है। साथ ही साथ यह सशय भी दर हो गया कि वह परमात्मा ब्रह्मादि देवताओ में से है या उनसे अलग जगत्कारण जब नारायण है तो ब्रह्मादि देवताओ में से नहीं है। अलग ही है। इस तौर पर चारो उपनिषदो को मिलाकर एक मुँह यह बात साबित हुई कि जगत्कारण सद्वस्तु है। वह बडा है। वह चेतन और व्यापक है। वह ब्रह्मादि देवताओ से अलग नारायण है। अब तक जिस निश्चय पर हम पहुँचे उसके विरुद्ध मालूमहोने वाले कुछ वाक्यो पर भी थोडा विचार करना जरूरी है। एक जगह कहा है।

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः
पतिरेक आसीत्।
सदाधार पृथिवी द्यामुतेमां कस्मै देवाय
हविषा विधेम ॥

अर्थात् समस्त भूतो के पति हिरण्यगर्भ ही एक सृष्टि के पूर्व थे। उन्होने ही इस सृष्टि पृथ्वी और धुलोक को धारण किया। इससे मालुम होता है कि सृष्टि के पहिले रहने वाले हिरण्यगर्भ ही जगत्कारण है। यह हिरण्यगर्भ कौन है। दुनिया मे हिरण्यगर्भ शब्द चतुर्मुख ब्रह्माजी के लिये प्रयुक्त होता है। अतएव जगत्कारण ब्रह्माजी को मानना होगा। इस प्रकार का सदेह मन में जब पैदा होता है तो विचार करने के बाद यही निश्चय करना पड़ता है कि इस मत्रमें जो हिरण्यगर्भ शब्द है वह चतुर्मुख ब्रह्माका बाचक नहीं है। इस मत्र में हिरण्यगर्भ शब्द के साथ जगत्पति शब्द भी पडा हुआ है। 'पति विश्वस्यात्मेश्वर शाश्वतं शिवमच्युतम्। नारायण महाज्ञेय' इत्यादि। अनेको दूसरे मंत्रो में विश्व के पति नारायण बतलाये गए है। उन मत्रों के साथ मिलान करने पर यहाँ पर हिरण्यगर्भ शब्द नारायण का वाचक मानना पड़ेगा। इस मत्र में हिरण्यगर्भ को पृथ्वी का धारणकर्त्ता कहा है। बाराह रूपधारी नारायणने पृथ्वी का उद्धार किया, यह किसको नही मालूम है। विष्णुना विधृते भूमी इत्यादि जगहो पर भूमिका धारण करने वाला विष्णु बताया गया है। पृथ्वी के धारण करनेकी बात चतुर्मुख ब्रह्मा में नहीं घटती। इस वास्ते हिरण्यगर्भ शब्द यहाँ पर नारायण ही मानना होगा। हिरण्यगर्भ शब्द साधारण शब्द है, हित यानो प्यारे रमणीय यानी सुन्दर धाम में रहने के कारण विष्णु भगवान् का नाम हिरण्यगर्भ है। श्रीविष्णुसहस्रनाम में कहा है 'हिरण्यगर्भः शत्रुघ्नो व्याप्तो वायुरधोक्षज।' भगवान् के हजार नामो में हिरण्यगर्भ भी है। इस वास्ते जगत्कारण श्रीमन्नारायण यही है। पूर्व में जैसा निश्चय कर चुके उसमें कोई रुकावट पैदा नहीं हुई।

सूर्य्या चन्द्रमसौधाता यथापूर्वमकल्पयन्।

इस बचन में सूर्य चन्द्र आदि के बनाने वाले को धाता के नाम से पुकारा है। दुनिया में धाता भी चतुर्मुख ब्रह्मा के लिये इस्तेमाल किया जाता है। मगर यहाँ पर धाता शब्द ब्रह्माजी के लिये नहीं आया है। यह मत्र अम्भस्यपारे नामक अनुवाक में का है। और यह अनुवाक नारायण के विषय का है—यह बात सभी लोक मजूर किया करते है। इस के अलावा श्रीविष्णुसहस्रनाम में कहा है कि 'अनादि निधनो धाता, अर्थात् धाता शब्द को विष्णु भगवान् का वाचक माना है। इस वास्ते सूर्य चन्द्र आदि के कर्ता भी नारायण ही है।

"प्रजापति. प्रजाअसृजत" इस बचन में प्रजापति प्रजाका स्रष्टा बताया गया है। परन्तु यह प्रजापति चतुर्मुख ब्रह्मा नहीं हो सकता। चतुर्मुख ब्रह्मा तो खुद स्रजे जाते हैं। जो स्वयं दूसरे से पैदा किया हुआ होता है वह जगत्कास्रष्टा कैसे माना जा सकेगा "यो ब्रह्माणं विदधाति पूर्वं" "स प्रजापतिरेक पुष्करवर्णे समभवत्" नारायणाद्ब्रह्मा जायते" "यन्नाभिपद्मादभवन्महात्मा प्रजापति विश्वसृग् विश्वरूपः" इत्यादि बहुत सी जगह वेदों में ब्रह्मा नारायण के नाभि कमल से उत्पन्न और नारायण द्वारा पैदा किए हुए बताए गए है। "पति विश्वस्यात्मेश्वर शाश्वतं शिवमच्युतम्" इत्यादि पहिले बताए हुए प्रमाणो से विश्व के पति नारायण ही सिद्ध होते है। तब वह प्रजा का पति होय तो कौन सी रुकावट है। "जेष्ठः श्रेष्ठः प्रजापति." "हिरण्यनाभः सुतपाः पद्मनाभः प्रजापति' श्रीविष्णुसहस्रनाममें प्रजापति शब्द विष्णु के नामों में गिनाया गया है। इस वास्ते प्रजापति नारायण ही जगत्कारण है इस पहिले से किये हुए सिद्धान्त में कोई फर्क नहीं पड़ता।

यदा तमस्तन्न दिवा न रात्रिर्न सन्न
चासन्दिवएव केवलः।

इस वचन में कहा गया कि जब यह जगत्तमोरूप को प्राप्त हो गया था उस वक्त अर्थात् सृष्टि से पहिले एक शिव ही शिव थे कोई भी दूसरा नहीं था। अच्छा तो जगत्कारण शिव होना चाहिये। शिव नाम श्रीमहादेव जी का है। अतएव यह शका पैदा हो जाती है कि क्या शिव ही जगत्कारण है लेकिन नहीं। शिव अर्थात् महादेव जी जगत्कारण नहीं हो सकते, शिव तो स्वय ब्रह्माजी की तरह नारायणसे ही उत्पन्न होते है। एक जगह वेद में कहा है।

नारायणात् ब्रह्मा जायते नारायणात्रुद्रो-
जायते इति।

नारायण से ब्रह्मा पैदा हुए और नारायण ने रुद्र को उत्पन्न किया। अब यहाँ पर यह बात पूछी जा सकती है कि तो फिर इस वेद वचन में जो शिव को जगत्कारण बतलाया गया उसका क्या हाल होगा सुनिये शिव शब्द साधारण शब्द है। इससे किसी देवता का निश्चय नहीं हो सकता।

शिवश्शिवानामशिवो शिवानाम् शिवास्ते
सन्तु पन्थानः।
शिव कर्मास्तु श्वःश्रेयस शिवं भद्रम् ॥

इत्यादि अनेक जगहो पर शिव शब्द मंगलवाची दिन रात देखा जाता है। "शाश्वत शिवमच्युतम् नारायणं महाज्ञेयम्'। इस वेद बचन में नारायण के लिये शिव शब्द का प्रयोग है। "सर्व शर्वः शिवः स्थाणुः" विष्णुसहस्रनाम के इस श्लोक में शिव नाम नारायणका गिनाया गया है। इस वास्ते नारायण ही शिव है और नारायण ही जगत्कारण है—यह बात अखण्ड कायम रहती है। अब तक हमने खास वचनो को लेकर यह बात बतलाई कि यदि कोई किसी प्रकार हिरण्यगर्भ धाता प्रजापति शिव आदि शब्दो से ब्रह्मा जी या महादेव जी को जगत्कारण समझ बैठे तो किस तरह वेद के बचनो में परस्पर विरोध पैदा हो जाता है और यह बात भी बतलाई कि इस प्रकार के विरोध को दूर करने का क्या उपाय है। इसी प्रकार के अन्य भी बहुत से बचन वेदो में आए है। उनका भी इसी प्रकार विरोध दूर करना

चाहिये। ब्रह्म सूत्रोंमें इसी प्रकार विरोध आशका हटा कर इन्द्र प्राण आदि शब्द ब्रह्म वाची बतलाए है। और जिस प्रकार की युक्तियो की सहायता वहाँ पर ली गई उसी प्रकार की तरकीबो की सहायता से जगत्कारण प्रकरण के समस्त शब्द श्रीमन्नारायण पर लग जाते हैं और श्रीमन्नारायण ही जगत्कारण ठहरते हैं।

अब यहाँ पर एक शका उठ सकती है। वह यह कि जैसे प्रजापति शिव आदि शब्दों का योगार्थ लेकर यह शब्द नारायण के बाची मान लिये गए और नारायण को जगत्कारण माना गया वैसे ही क्यो न कोई चतुर्मुख ब्रह्माजी को मुख्य जगत्कारण मानकर शिव, नारायण आदि इतर सभी शब्दो का योगार्थ ब्रह्माजी में कर उन्हे जगत्कारण न ठहरा दे या कोई महादेव जी को मुख्य जगत्कारण मानकर प्रजापति नारायण आदि शेष शब्दो का योगार्थ महादेव जी में कर उन्हे जगत्कारण ठहरा दे। क्यो नहीं। नारायण शब्द चतुर्मुख या महादेवजी के विषय में लगा सकते। इसका उत्तर यही है कि नहीं नारायण शब्द सब जगत्के एकमात्र आधार घट-घटबासी सर्वव्यापक विष्णु का असाधारण नाम है। वह किसी दूसरे देवतामें लग ही नहीं सकता। नार और अयन इन दो पदो के मेल से 'नाराणा' अयनम् इस व्युत्पत्ति से नारायण शब्द बना है। अयन शब्द का नकार नारायण शब्द में कारण बन गया है। यह व्याकरण की रीति से तभी बन सकता है

जब यह शब्द किसी की संज्ञा हो अर्थात् किसी का नाम हो। वैसे नहीं 'पूर्वपदात्संज्ञा या मग' यह सस्कृत व्याकरण की पुस्तक श्रीपाणिनिप्रणीत अष्टाध्यायी का सूत्र है। इस वैयाकरण सूत्रसे सज्ञारूपशब्दमें ही नकारणकार बन सकता है। नारायण यह विष्णु को छोड़कर किसी दूसरे देवता ही सज्ञा नहीं है। अतएव नारायण शब्द असाधारण है। अन्य रुद्र शम्भु शिव धाता प्रजापति हिरण्यगर्भ आदि शब्द नारायण के लिये बोले जा सकते है यही नहीं उन शब्दो का नारायण में प्रयोग प्रसिद्ध भी है। उन शब्दो को हम नारायण के लिये जहाँ तहाँ शास्त्रो में प्रयुक्त देखते भी हैं। इस वास्ते अन्य समस्त शब्द नारायण शब्द में पर्यवसान पा जाते है अतएव नारायण ही जगत्कारण है इस सिद्धान्त में कोई अडचन नहीं पडती जो जगत्कारण है वही परमात्मा परब्रह्म है मुक्ति के वास्ते उपास्य भी यही है।

इस सारे कहने का मतलब यह है कि ईश्वर विषयक ज्ञान के लिये वेद शास्त्रो का ही सहारा लेना आवश्यक है। मनुभुखो युक्तियो नहीं। वेदों में लिखा है कारणं तु ध्येयः। जगत्कारण की मुक्ति के वास्ते उपास्य है। जगत्कारण कौन है। सत् है जगत्कारण सत् सत्ता से युक्त वस्तु को कहते है। सत्ता तो ईश्वर जीव प्रवृत्ति तीनोकी है। इस वास्ते यह बात साफ न हुई कि जगत्कारण कौन है। ब्रह्म शब्द बडे का वाची है। आत्मा शब्द भी आत्मादेहे धृतौजीवे स्वभावे परमात्मनि इस कोष के बचन के अनुसार जीव ईश्वर वेह का वाचक है। इस वास्ते इन शब्दो से जगत्कारण निर्णयन हो सका। इसी प्रकार से 'शिव एव केवलः हिरण्यगर्भः समवर्तता इत्यादि वेद बचनों में शिव हिरण्यगर्भ जैसे समान शब्द भी अनेक चीजो के वाचक होने से फिर भी जगत्कारण कौन है यह आकांक्षा बनी ही रहती है। इसी वास्ते महोपनिषद् में नारायण को जगत्कारण बताया। नारायण शब्द नानार्थक नहीं। यह ईश्वर का आसाधारण नाम है।

सामान्य शब्द विशेष में पर्यवसान पा जाता है। विशेष शब्द सामान्य में नहीं लगता कोई किसी से कहे शाक ले आने को कहे। तो जो शाक वह ले आवेगा। उसको लेना होगा। शाक शब्द साधारण शब्द है। कछू भिंडी वडहल सभी शाक है। परन्तु यदि वह उससे असाधारण शाक का नाम लेकर कहे कि वडहल ले आना तो वह अन्य शाक के लाने का अधिकारी नही रहता। इसी तरह सारे के सारे शिव हिरण्यगर्भ आदि शब्द साधारण शब्द है। वे जिस तरह नारायण में लागू होने होते है उसी प्रकार कैलाशवासी महादेव और चतुर्मुख ब्रह्मामें भी लागू होते हैं। परन्तु नारायण शब्द असाधारण है। वह किसी दूसरे देवता मे लग नहीं सकता। प्राचीन समय में दक्षिण भारत के वीरशैव एक पडित है जिनका नाम था अप्पय दीक्षित। अप्पयदीक्षित बडे धुरन्धर विद्वान् थे। उन्होने अनेक उत्तम ग्रन्थो की रचना की। वह इतने कट्टर शैव थे कि उन्होंने जब श्रीविष्णु सहस्रनाम का भाष्य लिखा तो भगवान विष्णु के सभी नामो को व्याकरण के जोर से शिव जी पर घटा दिया। एक नारायण शब्द ही असाधारण शब्द ऐसा था जहाँ दीक्षत जी की कोई दाल न गल सकी। मरते समय तक उनको अपने कार्य के अधूरे रह जाने का दुःख रहा। जब मरने लगे तो उनके गले में झटका लगा उनके प्राण खिचने लगे शिष्यो ने पूछा क्या तकलीफ है। बोलिये तो सही। वे कहने लगे णत्व बाधते। नारायण शब्द का णत्व गले में अटका पड़ा है।

यही चैन से मरने नहीं देता। अर्थात् नारायण शब्द के अयन मे नकार यदि कारण न बन गया होता तो इस नाम को भी शिवजी में लगा देता और चैन से मरता। कहने का मतलब यह है कि इतर सम्प्रदायो के बड़े बड़े धुरन्धर विद्वान् भी नारायण शब्दको अन्य किसी देवता में आज तक न लगा सके। विद्वान् लोग इस णत्व पर परस्पर शांस्त्रार्थ करते है। कोटि क्रम चलता है। पर यह टस से मस नहीं होता। यह विष्णु भगवान् पर ही जमा रहता है। इस वास्ते नारायण जगत्कारण है यह बात निस्संदेह है।

(अनन्त सन्देश की सौजन्य से)

भैरव देव मन्दिर

आर रामकृष्ण राव, एम ए.बी एड.,
भिलाई नगर.

आलय का रमणीय दृश्य

भैरव देव मन्दिर एक अविसरणीय अद्वितीय, ऐतिहासिक और दर्शनीय स्थान है। यह अतिपुरातन और परमपावन स्थान हैं। करीब आठ सौ वर्ष पूर्व निर्मित है।

मध्य प्रदेश के दुर्ग जिले के कवर्धा तहसील में कवर्धा नगर के पश्चिम मे १८ किलोमीटर दूर और बोंदला के दक्षिण नौ किलोमीटर की दूरी पर है। नजदीक में छपरा नाम का एक गाँव है
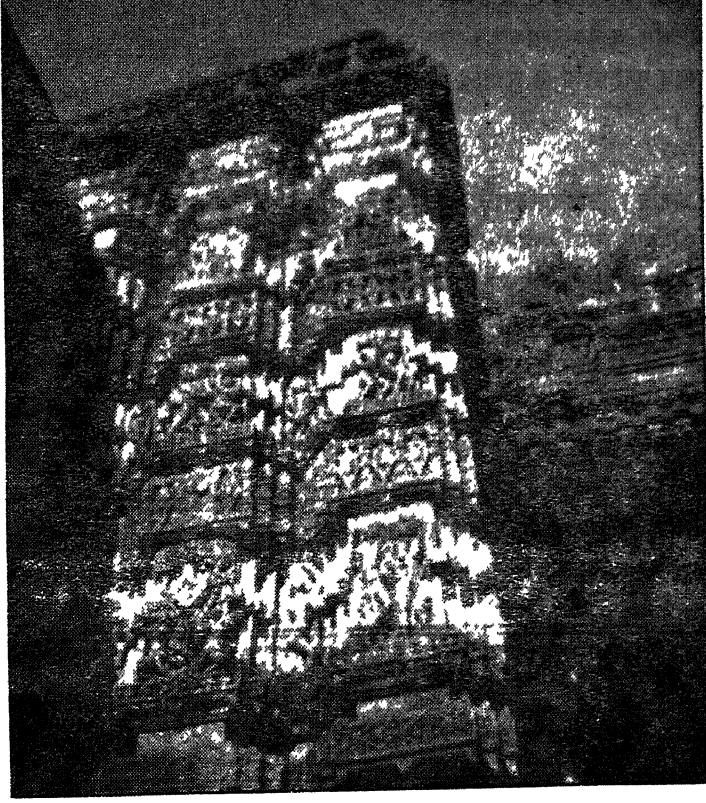
भैरव देव मन्दिर "छत्तीसगढ के खुजराहो" के नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ से कई किलोमीटर दूर हमें गर्मी के दिनों में भी पेड पौधों से भरपूर दिखाई देता है। मन्दिर के पुखें तथा चारों तरफ दूर-दूर तक फैले हरे भरें जगलों के कारण इस स्थान को शोभा और भी बढ जाती हैं।

मन्दिर के निर्माण की तिथि के बारे में वैसे कोई भी जानकारी विश्वसनीय रूप से प्राप्त नहीं है। अनुमान है कि मन्दिर छः से आठ सौ वर्ष पुराना है। उसे समीप के ही किसी भोरमदेव नामक राजा ने आराधना हेतु बनवाया था। मन्दिर केचारों तरफ ५-३ फीट ऊँची चहार दीवारी है तथा मुख्य प्रवेश द्वार अत्यन्त साधारण है। मन्दिर के चारों तरफ चार गवाक्ष हैं, तथा सभावृन के द्वार के ऊपर की छत कलाकारी का सुन्दर प्रदर्शन है। सभागृह में शिवलिंग के समीप ही राजा-रानी की करबद्ध मूर्तियाँ हैं। मान्यता है कि यहाँ शिव जी की आराधना करने से पुण्य प्राप्ति होती है।

(शेष पृष्ठ ४० पर)

सुंदर सरोवर
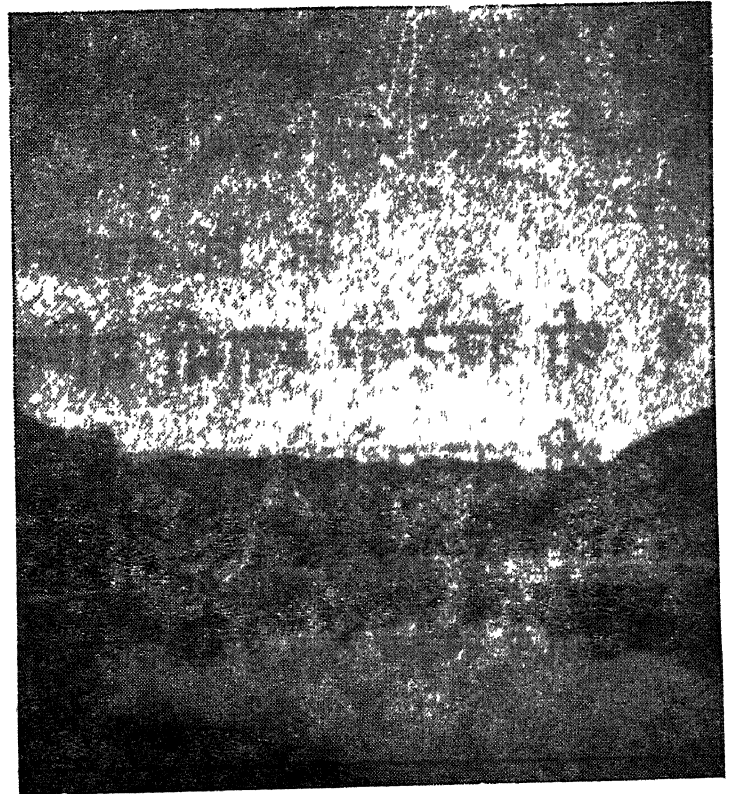
(पृष्ठ ८ का शेष)

कशास्त्रे आदावेवईक्षतेर्नाशब्दमिति स्वतन्त्र-स्यतस्यानुमनिकस्य जगत्कारणत्व निरस्तम्। उक्तरीत्या मायावा दस्य शारीरक शास्त्र तात्पर्यविषयतासम्भवेन सत्यमेव तत्त्वत्रयमभ्यु-पगच्छता वेदविदां सर्वास्तितावेद एव शारीरिक शास्त्रस्य तात्पर्यम्। अतएव यथार्थ सर्वविज्ञान मिति वेदविदा मतम्। श्रुतिस्मृतिभ्यस्सर्वस्य सर्वात्मत्व प्रतीति त इत्यादिना यथार्थख्यातिरेव व्यासबोधायनद्रमिडाचार्य राममिश्रनाथयामुन प्रभृतीनामभिमतेति विस्तरेण भगवता भाष्य-कारेणा भाषि। नात्र विप्रति पत्तव्यम्। सोऽयं सङ्गृतीतस्सर्वदर्शनसमन्वयः भारत प्रणेतु-र्बादरायणस्याभिमत इति प्रतिपत्तव्यम्। अत-एवोत्पत्त्य सम्भवाधिकरणभाष्ये बादरायण-शिष्यभगवद्बोधायनवृत्त्यनुसारेण शारीरिकसूत्राक्ष-राणा व्याख्या प्रतिजानता भगवता भाष्यकारेणे-त्थमभाषि—"साङ्ख्य योगः पञ्चरात्र वेदा. पाशुपतं तथा। किमेतान्येकनिष्ठानि पृथङ्निष्ठा-शारीरके च साङ्ख्योक्ततत्तानामब्रह्मात्मकत्व निवामुने" इत्यादिना साङ्ख्यदीनामादरणीय-तोच्यते महाभारते। शारीरिकशास्त्रेतु साङ्ख्या दीनि प्रतिषिध्यन्ते। अत इदमपि पञ्चरात्र तत्तुल्यमि त्यादिना महताग्रन्थेन एतेषामेकनिष्ठ-मेवोपपादितम्। एवमेक साङ्ख्ययोगं वेदारण्यक मेवच। परस्पराङ्गान्येतानि पञ्चरात्र तु कथ्यते इति। साङ्ख्य च योगश्च साङ्ख्य योगम्। वेदाश्चारण्यकानि च वेदारण्यकम्। एक=एक तत्त्व प्रतिपादन परतया एकी भूतानि पञ्चरात्र-मितिकथ्यते।

एतदुक्तं भवति। साङ्ख्योक्तानि पञ्चविंशति तत्त्वानि, योगोक्त यमनियमनाद्यात्मक योग, वेदोदितकर्मस्वरूपाणि अङ्गीकृत्य तत्त्वाना ब्रह्मा-त्मकत्व योगस्य च ब्रह्मोपासनप्रकारत्व कर्मणां तदाराधनरूपतामभिदधति ब्रह्मस्वरूपं प्रतिपाद-यन्त्यारण्यकानि। तदेव परेण ब्रह्मणा नारायणेन स्वयमेव पञ्चरात्रतन्त्रे विशदीकृत मिति। एव निराकृतम्। न स्वरूपम्। योगपाशुपतयोश्च ईश्वरस्य केवलनिमित्तकारणता, परावरतत्वविप-रीत कल्पना, वेदबहिष्कृताचारश्च निराकृत। न योग स्वरूपं पशुपतिस्वरूपञ्च। अत "स-ाङ्ख्यं योगः पञ्चरात्रं वेदाः पाशुपतं तथा। आत्म प्रमाणान्येतानि न हन्तव्यानिहेतुभि.॥" इति तत्त दभिहित तत्तत्स्वरूप मात्रमङ्गीकार्यम्। नतु जिनसुगताभिहिततत्रवत्सर्वं बहिष्कार्यमित्यु-च्यते। यथागम यथान्याय निष्ठा नारायणः प्रभुरित्यनेनैकार्थ्यात्।

एतदुक्त भवति – न केवलं तत्तदागमपरामर्श न्यायपरामर्शोपिह्यत्रोक्तः यथान्यायमिति। सा-ङ्ख्यं योग इतिवचनस्यान्यथार्थश्चेत् वेदविरुद्धां-शेऽपि प्रामाण्याभिधायीदं वचनं "विरोधेत्व-नपेक्ष स्यादि" तिन्यायाद प्रमाणं स्यात्। निष्ठा नारायण इत्याद्यैकार्थ्या च्च साङ्ख्यं योग इति वचनस्योक्त एवार्थः। बौद्धादिग्रन्थेष्वपि अवि-रुद्धार्थसम्भवात्तत्स्वीकार प्रसङ्ग इति चेन्न। तेषु वेदाप्रामाण्यतद्विरुद्धार्थ प्रतिपादनं कृतं साङ्ख्या-दिषु तु वेदाङ्गीकार एवास्तीति तेष्वविरुद्धाश स्वीकार इति यथोक्त एवार्थ इति सर्व चतुरस्रम्।

सारासारविवेकज्ञा गरीयांसो विमत्सराः।
प्रमाणतन्त्रास्सन्तीति दर्शितोय समन्वयः॥"

इत्यकं पल्लवितेन।

अपूर्व दक्षिणावर्त शख —

तिरुमल स्थित भगवान बालाजी के अभिषेकार्थ एक अपूर्व व बडा "दक्षिणावर्त शख" जो "वलपुरी शख" नाम से अति प्रसिद्ध है, बनाया गया है । शुक्रवार के दिन मनाये गये साप्ताहिक अभिषेक के अवसर पर पुरुष सूक्तम् तथा स्तोत्रो के बीच स्वर्ण परत से आवृत इस शख मे दूध डालकर स्वामीजी का अभिषेक कियागया। इसकी विशिष्टता है कि सभी शखो के जैसे बाई ओर न रहकर दाईने ओर मुडा रहा है ।

क्यू काम्पलेक्स:—

तिरुमल यात्रियो की सुविधा के लिए नये अर्ध वृत्ताकार क्यू काम्पलेम्स निर्माण करने की योजना है, जिस मे १४,००० यात्री लोगो के लिए स्थान है । और जहाँ सभी प्रकार की सुविधाएँ जैसे सुविशाल हवादार व प्रकाशमान कमरें, पानी, कंटीन, शौचालय का प्रबध किया जाता है । जिन लोगों को आवास नहीं मिलती है, वे इसमें रहकर कालकृत्यादि करके भगवान के दर्शन कर सकते है ।

प्लवोत्सव.—

तिरुपति स्थित श्री कपिलेश्वर स्वामीजी के मंदिर में इस धनुर्मास में स्वामीजी का प्लवोत्सव मनाया जायगा । अत. भक्त जन इस विशेष अवसर पर स्वामीजी के दर्शन करके, उनके शुभासीस प्राप्त करें ।

३० – १२ – ७९ – रविवार – श्री गणेश, चन्द्रशेखर स्वामीजी का

३१ – १२ – ७९ – सोमवार – श्री सुब्रह्मण्येश्वर स्वामी जी को

१ – १ – ८० – मगलवार – श्री कपिलेश्वर स्वामी जी को

स्वर्ण रथ:—

तिरुमल स्थित श्री भगवान बालाजी के रथ को सोने की परत से आवृत्त करने की योचना है । अब तो चादी का रथ है, जिमे सोने में बदल रहे है । इसके लिए रु. ५ लाख खर्च अदाज से लगाया गया है ।

शिशुओं की प्रतियोगिता:—

अन्तर्राष्ट्रीय बाल वर्ष के अवसर पर तिरुमल व तिरुपति में सुंदर व स्वस्थ शिशुओं के लिए प्रतियोगता रखा गया । यह तो सिर्फ देवस्थान के कर्मचारियो की शिशुओं के लिए है तथा आयु के अनुसार तीन भागो में विभाजित किया गया— १) एक साल तक २) एक साल मे लेकर तीन साल तक ३) तीन साल मे लेकर पाच साल तक ।

लगभग ६० बच्चे तिरुपति में तथा १०० बच्चों ने तिरुमल में इस प्रतियोगिता मे भाग लिया । इसमे निम्नलिखित बच्चे विजता घोषित किय गये ।

दिनांक ८-११-७९ को तिरुमल के आर्ष सदस्सु भवन में –

१ साल तक : प्रथम : ची. श्रीनिवास चक्रवर्ति
द्वितीय : चि. बेबी

२-३ साल तक : प्रथम चि. महेश
द्वितीय : चि जी श्रीनिवास राव

३-५ साल तक : प्रथम : चि नागमणि
द्वितीय, चि प्रेम किरण

ग्राहकों से निवेदन

निम्नलिखित संख्यावाले ग्राहकों का चदा ३१–१–८० को खतम हो जायगा। कृपया ग्राहक महोदय अपना चंदा रकम मनीआर्डर के द्वारा जल्दी ही भेज दें ।

H 32, 164, 165, 167

निम्नलिखित पते पर चदा रकम भेजें :

संपादक,
ति. नि. देवस्थानम्,
तिरुपति

श्रीमते नारायणाय नमः

१०८ वाँ स्वाध्याय ज्ञान यज्ञ
अखिल भारतीय वेद विद्वत्सम्मेळनम्

इस समारोह में पांचरात्र-वैखानस, शैव, स्मार्त अर्चकों तथा पुराणों के पारायणकर्ताओं-पुरोहितों-पौराणिक कथावाचकों-भगवन्नाम संकीर्तनकारों से युक्त वैदिक विद्वानों (लगभग पांच हजार लोगों) का समावेश लोक कल्याणार्थ

श्री श्री श्री त्रिदण्डि श्रीमन्नारायण रामानुज जीयर स्वामीजी के अध्वर्य में

१००८ चतुरस्र होमकुण्डों के साथ

दि. २०-२-८० से लेकर २६-२-८० तक

आन्ध्रप्रदेश के 'तिरुमल' पुण्य क्षेत्र में श्री भगवान बालाजी की सन्निधि में

तिरुमल तिरुपति देवस्थान के सम्पूर्ण सहयोग से सम्पन्न होगा।

अतः भक्तजन इस विलक्षण यज्ञ कार्यक्रम में भाग लेकर,
तन-मन-धन से पूरी मदद देकर कृतार्थ बनें।

विनीत
१०८ स्वाध्याय ज्ञानयज्ञ निर्वाहक समिति
पी बी.सी. क्वार्टर्स, तिरुमल, चित्तूर जिला। (आं प्र.)

दिनाक ९-२२-७९ को तिरुपति के नूतन कार्यालय भवन में:-

१ साल तकः प्रथमः चि. कृष्ण चैतन्य कुमार
द्वितीयः चि श्री चरण

१-३ साल तकः प्रथमः चि हेमलता
द्वितीयः चि. विजय लक्ष्मी

३-५ साल तकः प्रथम. चि. रामेश्वरी
द्वितीयः चि नरसिंहम्

तिरुपति में श्रीमति गोपिका प्रसादजी तथा तिरुमल में श्री मुनस्वामी नायुडु, उपकार्य-निर्वहणाधिकारी ने विजेताओ को पुरस्कार प्रदान किया।

डा. इन्द्राबाई, शिशुस्वास्थ्य चिकित्सक एम. वी आर आर कालेज, तिरुपति, डा रंगाराव, स्वास्थ्याधिकारी, तिरुपति म्युनिसि-पालिटी तथा डा रामय्या, तिरुमल के स्थानीय चिकित्सक इस प्रतियोगिता के लिए न्यायनिर्णायक रहे। मेडिकल कालेज के छात्र व जूनियर डाक्टरों ने इस कार्यक्रम के विजय के लिए देव-स्थान को सहयोग दिया।

डा. वै. आर. धनलक्ष्मी जी, देवस्थान के प्रवर स्वास्थाधिकारी तथा श्री एम रामकृष्णय्या जी, देवस्थान के संक्षेमाधिकारी ने इस कार्यक्रम का निर्वहण किया।

वरुण जप —

तिरुमल तिरुपति देवस्थान के अध्वर्य में ६ नवबर से लेकर ६ दिन तक तिरुमल स्थित पुष्करिणि के पास वरुण जप किया गया। इस अवसर पर श्री बालाजी का अभिषेक भी किया गया। ४५ वेदपण्डितों ने इस कार्यक्रम को शास्त्रोक्तानुसार निर्वहण किया। इस जप करते समय में ही पानी बरसना शुरू हुआ। इस कारण बिना पानी के रहे गो गर्भ डाम में पानी ३ फुट ऊंचाई तक बढी तथा जलाभाव का निवारण भी हुआ।

मासिक राशिफल

दिसंबर १९७९

* डा० डी. अर्कसोमयाजी, तिरुपति.

मेष

(अश्वनी, भरणी, कृत्तिका केवल पाद—१)

राहु के द्वारा आदोलन। शनि के द्वारा स्वस्थता, शत्रुओ पर विजय व धन प्राप्ति। गुरु के द्वारा अच्छाई, जिससे धन प्राप्ति, नौकर या नूतन वस्त्र या वाहन या सतान प्राप्ति। कुज के द्वारा अस्वस्थता या शत्रु या सतान के कारण आदोलन। रवि के द्वारा १६ तक अस्वस्थता या पत्नी को असतोष, बाद में निराशा या धन हानि या अस्वस्थता। शुक्र के द्वारा १७ तक अच्छाई, जिससे नूतन वस्त्र या धार्मिक प्रवर्तन, बाद में अगौरव या झगडे। बुध के द्वारा ६ तक घरेलू झगडे, बाद में नूतन वस्त्र, धन, विजय व संतान प्राप्ति, २९ के बाद प्रयत्नो में विघ्न।

मिथुन

(मृगशिरा पाद-३, ४, आर्द्रा, पुनर्वसु पाद-१,२,३)

राहु के द्वारा धन प्राप्ति। शनि के द्वारा सतान मे अलगाव या धन हानि। गुरु के द्वारा निराशा। कुज के द्वारा सतान के कारण या अक्रम पद्धति से धन प्राप्ति। रवि के द्वारा १६ तक स्वस्थता व विजय, बाद मे प्रयाण या उदर पीडा। शुक्र के द्वारा १७ तक स्त्री के कारण दुःख, बाद में लाभदायक, जिससे नूतन वस्त्र या श्रृगार या नूतन घर प्राप्ति। बुध के द्वारा ६ तक पत्नि व सतान मे झगडे, बाद में २९ तक गौरव, अनतर झगडे।

सिंह

(उत्तर फल्गुनि पाद-१, मख, पूर्व फल्गुनि)

राहु के द्वारा आदोलन। शनि के द्वारा धन हानि। गुरु के द्वारा बुराई, तद्द्वारा झगडे या अगौरव या धन हानि। कुज के द्वारा बुराई, जिससे शारीरक घाव। रवि के द्वारा १६ तक अस्वस्थता, बाद मे अस्वस्थता या झगडे। शुक्र के द्वारा २७ तक भलाई, जिससे रिश्तेदारो का आगमन व बडो की प्रशसा या धन प्राप्ति या सतान या अच्छे मित्र, बाद में अस्वस्थता या अगौरव। बुध के द्वारा ६ तक मित्र प्राप्ति, लेकिन नौकरी में बुरे प्रवर्तन के कारण आदोलन, २९ तक घर मे वस्तु समृद्धि, बाद मे पत्नी या सतान से झगडे।

वृषभ

(कृत्तिका पाद-२, ३, ४, रोहिणी, मृगशिरा पाद-१,२)

राहु के द्वारा झगडे। शनि के द्वारा धन हानि या झगडे या सतान से अलगाव। गुरु के द्वारा मानसिक अशाति। कुज के द्वारा बुखार, या उदरपीडा या बुरे मित्रो से हानि। रवि के द्वारा ६ तक प्रयाण या उदर पीडा, बाद में अस्वस्थता या पत्नी को असंतोष। शुक्र के द्वारा पूरा महीना भलाई जिससे नूतन वस्त्र, श्रृंगार या नया घर या धन प्राप्ति या धार्मिक प्रवर्तन। बुध के द्वारा ६ तक विजय, २९ तक झगडे, बाद में विजय, नूतन वस्त्र या सतान प्राप्ति।

कर्काटक

(पुनर्वसु पाद-४, पुष्य तथा आश्लेष)

राहु के द्वारा धन हानि। शनि के द्वारा राहु के दोषो का निवारण तथा धन प्राप्ति, नौकर या नूतन वस्त्र व स्वस्थता। गुरु के द्वारा धन प्राप्ति। कुज के द्वारा नौकरी मे बाधाएँ या घर में चोरी या थोडी सी अस्वस्थता। रवि के द्वारा १६ तक बुखार, जिससे झगडे या अस्वस्थता, बाद मे स्वस्थता व विजय। शुक्र के द्वारा पूरा महीना बुराई, जिसमे अगौरव या अस्वस्थता तथा १७ के बाद स्त्री के कारण कष्ट। बुध के द्वारा ६ तक अच्छाई, जिससे धन प्राप्ति व घर मे वस्तु समृद्धि, २८ तक पत्नी या सतान से झगडे, बाद मे गौरव।

कन्या

(उत्तरा पाद २,३,४, हस्त चित्त पाद-१, २)

राहु के द्वारा आदोलन। शनि के द्वारा बुराई, जिसमे सतान से अलगाव या प्रयाण व प्रयास या धन हानि या सतान से झगडे, या शारीरक घाव। गुरु के द्वारा प्रयाण व प्रयास। कुज के द्वारा धन हानि या पत्नी को असतोष या नेत्र पीडा या अस्वस्थता। रवि के द्वारा १६ तक पद या धन प्राप्ति, बाद में अस्वस्थता। शुक्र के द्वारा १७ तक अच्छे मित्र, बाद मे बडो की प्रशसा या रिश्तेदारो का आगमन या धन या सतान प्राप्ति। बुध के द्वारा ६ तक अगौरव या धन प्राप्ति, बाद में अच्छे मित्र, लेकिन अपने बुरे प्रवर्तन के कारण नौकरी मे आदोलन तथा २९ के बाद घर में वस्तु समृद्धि।

तुला
(चित्त पाद-३, ४, स्वाति, विशाखा पाद-१, २, ३

राहु के द्वारा धन प्राप्ति । गुरु के द्वारा धन प्राप्ति । कुज के द्वारा धन व विजय । शनि के द्वारा आदोलन । रवि के द्वारा १६ तक बुराई, जिससे धन हानि या धोखा खाना या नेत्र पीडा बाद में धन प्राप्ति या पद, विजय व स्वस्थता । शुक्र के द्वारा १७ तक भलाई, जिससे धन प्राप्ति, गौरव या नूतन वस्त्र व विजय, बाद में अच्छे मित्र व अधिकार प्राप्ति । बुध के द्वारा धन प्राप्ति, लेकिन ६ तक अगौरव, बाद में अच्छे मित्र, परन्तु अपने बुरे प्रवर्तन के कारण नौकरी मे डर, तदनतर भलाई व घर में वस्तु समृद्धि ।

वृश्चिक
(विशाख पाद-४, अनुराधा, ज्येष्ठ)

राहु के द्वारा झगडे । गुरु के द्वारा धन हानि या अधिकार नष्ट । कुज के द्वारा भलाई, जिससे धन प्राप्ति व विजय । शनि के द्वारा धन प्राप्ति व शृंगार । रवि के द्वारा १७ तक धन हानि या प्रयाण व प्रयास या उदर पीडा, बाद में धन हानि या दूसरो से धोखा खाना या नेत्र पीडा । शुक्र के द्वारा पूरा महीना भलाई, जिससे धन प्राप्ति, खाद्य पदार्थ, घर में वस्तु समृद्धि, गौरव, या नूतन वस्त्र व विजय । बुध के द्वारा ६ तक झगडे या बुरे सलाह के कारण धन हानि, १९ तक धन प्राप्ति लेकिन अगौरव बाद मे अच्छे मित्र प्राप्ति, लेकिन नौकरी में आदोलन ।

धनुः
(मूल, पूर्वाषाढ, उत्तराषाढ पाद-१)

राहु के द्वारा अधार्मिक प्रवर्तन । गुरु के द्वारा विजय, धन व खाद्य पदार्थ, गौरव व सतान प्राप्ति । कुज के द्वारा बुराई, जिससे अगौरव या धन हानि । शनि के द्वारा अगौरव या धनहानि । रवि के द्वारा बुराई, जिससे धन हानि या प्रयाण व प्रयास या उदर पीडा । शुक्र के द्वारा पूरा महीना भलाई तथा १७ तक श्रृगार या सुख, बाद मे धन या खाद्य पदार्थ या गौरव या घर मे वस्तु समृद्धि या सतान प्राप्ति । बुध के द्वारा ६ तक भलाई, जिससे धन या श्रृगार या अच्छे मित्र, या वाहन या सतान प्राप्ति, २९ तक शत्रुओं के कारण आदोलन या अगौरव या अस्वस्थता, बाद मे झगडे या बुरे सलाह के कारण धन हानि ।

मकर
(उत्तराषाढ पाद-२, ३, ४ श्रवण, धनिष्ठ पाद १, २)

राहु के द्वारा अस्वस्थता । गुरु के द्वारा अस्वस्थता या प्रयाण व प्रयास । कुज के द्वारा शारीरक घाव या धन हानि या अगौरव । शनि के द्वारा अस्वस्थता या झगडे या अधार्मिक प्रवर्तन । रवि के द्वारा १७ तक स्वस्थता व विजय, बाद मे धन हानि या मार्ग मे बाधाए । शुक्र के द्वारा १७ तक धन या नूतन वस्त्र प्राप्ति बाद मे श्रृगार व सुख । बुध के द्वारा ६ तक धन व विजय या श्रृगार या नूतन घर, २९ तक धन, मित्र श्रृगार या वाहन या सतान प्राप्ति, बाद में अस्वस्थता या झगडे या अगौरव ।

कुंभ
(धनिष्ठ पाद-३,४, शतभिष, पूर्वाभाद्रा पाद-१, २, ३)

राहु के द्वारा झगडे । गुरु के द्वारा श्रृंगार । कुज के द्वारा पत्नी से झगडे या नेत्र पीडा या उदर पीडा या बुखार । शनि के द्वारा सतान से अलगाव । रवि के द्वारा पूरा महीना भलाई, जिस से विजय, गौरव, स्वस्थता व धन प्राप्ति। शुक्र के द्वारा १७ तक अच्छाई, जिससे धन, अच्छे मित्र व मानसिक शाति, बाद मे धन प्राप्ति व नूतन वस्त्र प्राप्ति । बुध के द्वारा ६ तक निराशा, बाद में धन व विजय तथा श्रृगार या नूतन घर, बाद में अस्वस्थता या झगडे या अगौरव ।

मीन
(पूर्वाभाद्र पाद-४, उत्तराभाद्र, रेवती)

राहु के द्वारा धनप्राप्ति । गुरु के द्वारा मानसिक अशाति । कुज के द्वारा विजय व धन प्राप्ति व स्वस्थता । शनि के द्वारा प्रयाण । रवि के द्वारा १६ तक अस्वस्थता, बाद में विजय व सुख प्राप्ति । शुक्र के द्वारा १७ तक बुराई, जिससे अगौरव या झगडे, बाद मे मित्र, धन व सुख प्राप्ति । बुध के द्वारा ६ तक विजय या नूतन वस्त्र या धन या सतान, २९ तक निराशा बाद मे धन व विजय प्राप्ति । ✡

(पृष्ठ ३५ का शेष)

मन्दिर का बाह्य भाग अत्यन्त कलात्मक रूप मे सवारा गया है, जिनपर देवता, किन्नर गधर्व अप्सरसें तथा विभिन्न जानवरों की मूर्तियाँ बनाई गई हैं। मन्दिर लाल पत्थरों से निर्मित है और मूर्तियाँ वर्षों से हवा पानी धूप का समना करते हुए भी सजीव सी प्रतीत होती हैं। मुख्य मन्दिर के समीप ही एक भग्नावस्था में मन्दिर भी है जिस में कोई मूर्ति नही है । गोपुर के चारों ओर स्त्री-पुरुष के रतिक्रीडा अवस्था में कई स्थान पर मूर्तियाँ हैं। इन सब को देखने से हम अचम्भे में रह जाते हैं। मानों कोई पत्थर पर नहीं बल्कि लकडी पर विभिन्न प्रकार के काव्य शिल्प किए गए है, ऐसा प्रतीत होता है । समय बीतने के साथ-साथ यह आलय भी शिथिल होता जा रहा है। चरित्रकारों का और अन्य सम्बन्धित अधिकारियों का कर्त्तव्य है कि इस मन्दिर को भग्न होने से पहले ही-बचा लें।

आलय के सामने तीन पहाड के मध्य एक सरोवर है। प्रकृति के इस सहज सौन्दर्य से हम तन मन से पुलकित हो जाते हैं। और कुछ समय तक अपने आप को बाहर की परिस्थितियों से भूल जाते हैं। यह सरोवर केवल प्राकृतिक दृष्टि से ही नहीं बल्कि तीन पर्वतों के बीच में होने के कारण एक बांध जैसे बन गया है। समय समय पर इस पानी को नजदीक के कई गावों में खेती-बाडी के लिए और पीने के लिए उपयोग करते है।

यह एक नैसर्गिक और दर्शनीय स्थान है। मोटर कार, बस, स्कूटर आटो आदि द्वारा इस स्थल पर बहुत आसनी से जा सकते हैं। रास्ते में कोई उतार चढाव नही और न ही कोई घाटी है। राजनाँदगाँव से केवल तीन ही घटों में इस स्थल पर पहुँच सकते है।

EDITED AND PUBLISHED ON BEHALF OF THE T. T. DEVASTHANAMS BY K. SUBBA RAO, M.A. AND PRINTED AT T. T. D. Press, By M. Vijayakumar Reddy, Manager T. T. D. Press, Tirupati.

तिरुमल-यात्रियों को सूचनाएं

कलियुगवरद भगवान बालाजी ससार के कोने कोने से अगणित भक्तों को अपनी ओर आकृष्ट करते हैं। हर रोज हजारो भक्त कलियुगवैकुण्ठ तिरुमल का दर्शन कर पुनीत होते है। तिरुपति तथा तिरुमल पहुचनेवाले इन असख्य भक्तगणों की सुविधा (यातायात, आवास, बालाजी का दर्शन इत्यादि) केलिए ति नि. देवस्थान उत्तम प्रबन्ध कर रहा है। इन सुविधाओं के अतिरिक्त यात्रियों के भोजन की समस्या की ओर भी ध्यान दिया जा रहा है। देवस्थान की ओर से भोजनशालाओं की व्यवस्था तो है ही है उसके अतिरिक्त तिरुमल पर अन्य भोजनशालाए भी है जिन में भोजन पदार्थों की दरे ति ति देवस्थान के द्वारा नियत्रित की जाती है। अतएव यात्रियों से निवेदन है कि वे इन भोजन सुविधाओ का उपयोग करें।

तिरुमल पर भोजन सुविधाए

ति. ति. देवस्थान का अतिथि गृह

जलपान	(समय)	प्रात. ६ बजे से	९ बजे तक
		दोपहर ३ ,,	शाम ६ ,,
भोजन	,,	प्रात ११ ,,	दोपहर २ ,,
		रात ७ ,,	रात ९ ,,

यहा पर मिठाई, नमकीन, चाय, काफी इत्यादि पदार्थ उपलब्ध है।

भोजन (full) रु ३-००

जो लोग यहा से भोजन अथवा जलपान प्राप्त करना चाहते है उनको नियमित समय के तीन घटे के पूर्व ही आर्डर (order) देना चाहिए।

काफी बोर्ड (कल्याणकट्टा के पास)

यहा पर केवल जलपान प्राप्त कर सकते है।
समय- प्रातः ५ बजे से रात १० बजे तक

काफी बोर्ड (क्यू शेड्स के पास)

यहा पर दहीभात, हल्दीभात तथा शीत पेय प्राप्त होते है।
समय प्रात. ५ बजे से रात १० बजे तक

टी बोर्ड (ए. टी. काटेज के पास)

यहा पर चाय तथा बिस्कुट प्राप्त होते है।
समय: प्रातः ५ बजे से रात ९ बजे तक

अन्नपूर्णा भोजनालय

यहा पर अनेकविध मिठाई, नमकीन आइस क्रीम, शीत तथा गरम पेय प्राप्त होते है।
(समय) प्रात: ५ बजे से रात १० बजे तक

भोजन समय - प्रात. ९ बजे से शाम ३ बजे तक
तथा
शाम ६ बजे से रात १० बजे तक

भोजन (थाली)	रु १-७५
अतिरिक्त प्लेट भात	रु ०-६०
भोजन (full)	रु ३-००

वुडलॉड्स (ति ति दे के अतिथिगृह के पास)

यहां पर जलपान, भोजन, शीत तथा गरम पेय प्राप्त होते हैं।

जलपान	(समय)	प्रातः ६ बजे से रात १० बजे तक
भोजन	,,	प्रातः ११ बजे से दोपहर २-३० बजे तक

मद्रास भोजन	रु. ४-००
उत्तर भारतीय भोजन	रु. ६-००
प्लेट भोजन	रु १-७५

तिरुपति मे देवस्थान का भोजनालय

ति ति देवस्थान का भोजनालय (पहली धर्मशाला)

समय प्रातः ५ बजे से रात ९ बजे तक

यहां पर जलपान, आम्रो बिस्कुट तथा शीत और गरम पेय प्राप्त होते है।

ति. ति. देवस्थान का भोजनालय (दूसरी धर्मशाला)

यहा पर जलपान, भोजन, शीत तथा गरम पेय प्राप्त होते है।

जलपान	(समय)	प्रातः ५ बजे से	प्रातः ९-३० बजे तक
		दोपहर २-३० ,,	शाम ६ बजे तक
भोजन	,,	प्रातः १०-३० ,,	दोपहर २ बजे तक
		६-३० ,,	रात ९ ,

प्लेट भोजन	रु. १-५०
अतिरिक्त भात (३५० ग्राम)	रु १-००
दही	रु. -४०

मानव-माधव सेवाओं से युक्त कलियुग वैकुण्ठ सेवा

श्री बालाजी के दर्शन के लिए तिरुमल आनेवाले यात्रियों को अन्न प्रसाद वितरण की योजना

[illegible] साल से लगातार विशेष आगम सहित आराधना किये जानेवाले एकैक मंदिर, श्री बालाजी का मंदिर है। इस मंदिर में विशेष अवसरों पर ५० या ६० हजारों के बीच और अन्य साधारण दिनों में २० या २५ हजारों के बीच भक्तजनों का दर्शन करनेवाला दिव्य क्षेत्र है।

- कश्मीर से कन्याकुमारी तक आराध्य देवमूर्ति श्री बालाजी हैं। हजारों भक्त, गरीब लोग अपने पास रहे पूरे धन को खर्च करके श्री वारि दर्शन के लिए पहाड़ को पैदल चलकर आते हैं। फिर लौट जाते समय अपने साथ श्री वारि प्रसाद को ले जाकर बन्धु मित्रों में भी बाँटने की इच्छा रखना सर्वसाधारण है।

- ऐसे गरीब लोगों को यदि प्रसाद मुफ्त में बाँट दिया जाये तो उससे बढ़कर और कोई सेवा भी नहीं होती।

- इस उद्देश्य से ही देवस्थान ने मध्य वर्गीय परिवारों को भी इस धर्म कार्य में भाग लेने के अनुकूल एक योजना बनाया। इसके मुख्यांश ये हैं :—

- श्री वेंकटेश्वर नित्य प्रसाद धर्मोदय योजना के नाम पर चलनेवाले इस कार्यक्रम में रु. ५०० चुकाकर कोई भी भाग ले सकते हैं। इस रकम को बैंक में मूल धन के रूप में जमा कर दिया जायगा। उस पर हर साल आनेवाली सूद रु. ४५ से हर साल २० लड्डू या १५ वडे या २० भात की पोटलियाँ उनके बताये दिन पर गरीब यात्रियों को बाँट दिये जायेंगे।

* यह शाश्वत निधि होने के कारण सिर्फ एक बार जमा करें तो, निरंतर सूद आती रहती है। दाताएँ अपनी पसंद की तिथि बतायें तो उसी दिन दाता के नाम पर या उसके द्वारा बताये गये अन्यों के नाम पर इस प्रसाद का वितरण किया जायगा।

* उस निर्णीत दिन के सुबह स्वामीजी के दर्बार में उस दाता के नाम तथा गरीब यात्रियों को प्रसाद वितरण करने के बारे में निवेदन कर दिया जायगा।

* इस प्रकार रु. ५०० की पद्धति पर एक ही व्यक्ति कई दिनों का भी इंतजाम कर सकता है।

* इस प्रकार बीस निधियाँ या एक ही दिन के लिए रु. १०,००० को दिये तो निर्णीत दिन पर सपरिवार उस कार्यक्रम को आ सकते हैं और भगवान बालाजी का भी दर्शन कर सकते हैं।

* इस योजना के लिए निधि स्वीकार करना तुरंत ही शुरू होती है। प्रसाद वितरण १९८० साल में आनेवाली युगादि से शुरू किया जायगा।

* श्री वारि दर्शन के लिए आनेवाले यात्रिक गणों में अति गरीब लोगों की सेवा में बिना तरतम भेद के सभी लोग शामिल होकर भगवान बालाजी के शुभासीस प्राप्त करने का अपूर्व मौका है।

* मानव सेवा तथा माधव सेवा के रहने के कारण दुगुना पुण्य कमाने की इस अपूर्व मौके को हर एक भक्त उपयोग करें तथा हमारा निवेदन है कि आप इस योजना के लिए दान भेजें।

- इस योजना को दिये जानेवाले रकम पर आयकर से भी छूट प्राप्त कर सकते हैं।

तिरुमल-तिरुपति देवस्थान, तिरुपति.